सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, 2021 वर्ष 20 अंक 05

अल्लाह

नहीं माबूद कोई है मगर अल्लाह
नहीं मस्जूद कोई है मगर अल्लाह
नहीं ख़ालिक़ है कोई मगर अल्लाह
नहीं रज़्ज़ाक है कोई मगर अल्लाह
नहीं देता कोई शिफा मगर अल्लाह
नहीं सुनता कोई दुआ मगर अल्लाह
मुहम्मद हैं नबी अल्लाह के
मुकर्रम हैं नबी अल्लाह के
रहमतें या रब नबी पे और सलाम
उनकी सारी आल पर या रब सलाम
उनके सब अस्हाब पर या रब सलाम
उनकी सब अज़्वाज पर या रब सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
हिज्री कलेण्डर का बारहवां	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी	11
मनोरंजन के संसाधनों में इस्लाम	मौ0 सै0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	15
इस घर को आग लग गई	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	19
हालात के बिगाड़ का बड़ा सबब	मौ0 सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	23
आह! बड़े भाई फ़ज़लुलबारी	गुफ़रान नदवी	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	27
रब की बड़ाई	मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह0	30
कुर्बानी के कुछ अहम मसायल	इदारा	32
ईदैन की नमाज़	इदारा	34
सहा–बए–किराम से अक़ीदत	सम्पादक	36
मानव इतिहास की एक बड़ी कुर्बानी	ताजुद्दीन अशअर रामनगरी	37
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

यह भी आप बता दीजिए कि मैं अपने लिए कुछ भी नफ़ा—नुक़सान का मालिक नहीं सिवाए इसके कि जो अल्लाह चाहे और अगर मैं गैब (परोक्ष) की बात जानता तो बहुत कुछ अच्छी —अच्छी चीज़ें जमा कर लेता, और मुझे तकलीफ़ भी न पहुँचती, मैं तो उन लोगों के लिए डराने वाला और शुभ समाचार सुनाने वाला हूं जो मानते हैं [1](188) वही है जिसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा बनाया ताकि उससे वह चैन—सुकून प्राप्त करे फिर जब उसने उसको ढ़ाँप लिया तो उससे हलका सा गर्भ धारण हुआ तो वह उसी में चलती फिरती रही फिर जब उसे बोझ हुआ तो दोनों ने अपने पालनहार से दुआ की अगर तूने स्वस्थ संतान हमें दे दी तो ज़रूर हम आभारी होंगे(189) फिर जब उसने उनको स्वस्थ संतान दे दी तो उनको जो अल्लाह ने दिया उमसें वे उसका साझी ठहराने लगे तो अल्लाह उनके साझी से पाक है [2](190) क्या वे उसको साझी बनाते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता और खुद उनको पैदा किया गया है(191) और न वे उनकी सहायता कर सकते हैं और न ही अपनी मदद कर सकते हैं(192) और अगर तुम उनको सही रास्ते की ओर बुलाओ तो वे तुम्हारे पीछे न चलेंगे, उनके लिए बराबर है तुम उनको बुलाओ या खामोश रहो(193) बेशक अल्लाह को छोड़ कर तुम जिसको भी पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे बन्दे (उपासक) हैं, बस तुम उन्हें पुकारो तो अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें तुम्हारी दुआ कुबूल करनी चाहिए(194) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हैं या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हैं या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हैं या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं, कह दीजिए कि तुम अपने सहभागियों को बुलाओ फिर मेरे खिलाफ़ चाल—चलो और मुझे मोहलत मत दो[3](195) बेशक मेरा हिमायती (समर्थक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है(196) और तुम उसके अलावा जिनको पुकारते हो वे तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न ही वे अपने काम आ सकते(197) और अगर तुम उनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ तो वे सुनेंगे ही नहीं और आप उन्हें देखेंगे कि वे आपको ताक रहे हैं हालांकि वे देख नहीं सकते(198) माफ़ी का

रवय्या बनाईए, भलाई को करते रहिए और नादानों से किनारा कीजिए(199) और अगर कभी आपको शैतान का कचोका लगे तो अल्लाह की पनाह लीजिए बेशक वह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है[4](200) बेशक परहेज़गारों का हाल यह है कि जब भी शैतान की ओर से ख़्याल छू कर भी गुज़रता है तो वे चौंक जाते हैं बस उनकी आँखें खुल जाती हैं(201) और जो उनके भाई बन्धु हैं (शैतान) उनको गुमराही की ओर खींचे लिए जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते [5](202) और जब आप उनके पास कोई निशानी नहीं लाते तो वे कहते हैं आप क्यों न कोई निशानी चुन लाए, आप कह दीजिए मैं तो उसी के पीछे चलता हूँ जो वही मेरे पालनहार के पास से मुझ पर आती है, यह आपके पालनहार की ओर से बसीरत (अंतदृष्टि) की बातें हैं और हिदायत व रहमत है मानने वालों के लिए(203) और जब भी कुर्आन पढ़ा जाए तो कान लगा कर उसे सुनो और खामोश रहो ताकि तुम पर कृपा हो[6](204) और आप मन ही मन में सुबह व शाम अपने पालनहार को विनम्रता और भय के साथ याद करते रहिए और ऐसी आवाज़ से जो पुकार कर बोलने से कम हो, और बेख़बर न हो जाइए(205) जो भी आपके पालनहार के पास हैं वे उसकी उपासना से अकड़ते नहीं और उसकी पवित्रता बयान करते हैं और उसी को सजदा करते हैं(206)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. ऊपर सबसे छिपी हुई चीज़ कयामत का वर्णन था और बता दिया गया था कि उसके समय का ज्ञान किसी को हो ही नहीं सकता यहां साधारण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहलवाया जा रहा है कि मैं ढ़की छिपी बातों को नहीं जानता अगर जानता होता तो मुझे किसी अवसर पर कोई परेशानी न होती मैं तो रास्ता बताने के लिए आया हूँ।

2. हज़रत आदम व हव्वा के पैदा होने का उल्लेख किया फिर एक उदाहरण दिया कि मर्द औरत से संबंध बनाता है तो गर्भ धारण होता है शुरु में आसानी रहती है फिर बोझ होता है तो दोनों अल्लाह से दुआ करते हैं फिर जब स्वस्थ संतान अल्लाह प्रदान करता है तो वे अल्लाह को छोड़ कर दूसरे पर चढ़ावा चढ़ाते हैं और शिर्क करने लग जाते हैं।

3. जिन मूर्तियों को तुमने उपास्य ठहराया है वे तुम्हारे काम तो क्या आते स्वयं अपनी रक्षा में भी असमर्थ हैं और उन खूबियों से भी वंचित हैं जो खुद तुम्हें प्राप्त हैं, तुम सुन सकते हो अपने हाथ पांव हिला सकते हो वे कुछ नहीं कर सकते तुम चीख चीख कर थक जाओ एक शब्द अपनी ज़बान से निकाल नहीं सकते, मक्ख़ी बैठ जाए तो उड़ाने में सक्षम नहीं फिर इस पर धमकियां देते हो कि उनका खण्डन छोड़ दो वरना बिप्ता में पड़ जाओगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से अल्लाह कहता है कि अपने सब उपास्यों को बुला लो वे सब मिल कर मेरे खिलाफ़ कार्यवाही कर लें।

शेष पृष्ठ .....08....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

सय्यदुल इस्तिगफार (अर्थात इस्तिगफार का सबसे अहम तरीक़ा):–

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया सय्यदुल इस्तिगफार यह है:—

अनुवादः— ऐ अल्लाह तू ही मेरा मालिक है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने मुझ को पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त भर तेरे अहद और तेरे वादे पर क़ायम हूँ, अपने गुनाहों की बुराई से तुझ से पनाह मांगता हूँ और जो मुझ पर तेरे एहसान हैं उसका इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का ऐतराफ करता हूँ, इस लिए मुझ को बख्श दे, इसलिए कि तेरे सिवा कोई गुनाहों का बख्शने वाला नहीं है, फिर फरमाया जो कोई इसको दिन में सच्चे दिल से पढ़े और उसी दिन मर जाये तो वह आदमी जन्नत में जायेगा और अगर रात को सच्चे दिल से पढ़ेगा और मर जायेगा तो वह जन्नत में जायेगा। (बुख़ारी)

नमाज़ के बाद इस्तिगफारः–

हज़रत सौबान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के बाद तीन बार इस्तिगफार पढ़ते थे और फिर यह कलिमात ज़बान मुबारक से अदा फरमाते थे ''अल्लाहुम्मा अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबारकत या ज़लज़लालि वल इकराम'' औज़ाई रज़ि0 इस हदीस के रावी हैं, उनसे पूछा गया कि कौन सा इस्तिगफार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ते थे तो उन्होंने कहा अस्तगफिरुल्ला,अस्तगफि—रुल्ला। (मुस्लिम)

वफात से पहलेः–

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मौत से पहले बहुत ज़ियादा यह कलिमात अपनी ज़बान से पढ़ा करते थे (सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तगफिरुल्लाह, अस्तग—फिरुल्लाह व अतूब इलैहि।

(बुखारी—मुस्लिम)

अल्लाह की रहमत व बख्शिशः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि अल्लाह तआला का इरशाद है कि ऐ बनी आदम जब तक तू मुझ से मांगेगा और मुझ से उम्मीद रखेगा तो मैं तुझ को बख्शूंगा चाहे तू किसी अमल पर हो और मैं कुछ परवाह न करूँगा (यानी तुझे बख्श देना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है)। ऐ आदम की औलाद अगर तेरे गुनाह आसमान तक पहुंच जायेंगे और तू मुझ से बख्शिश तलब करेगा तो मैं तुझ को बख्श दूंगा और कुछ परवाह न करूंगा, ऐ आदम की औलाद अगर तू इस कदर गल्तियाँ करे कि ज़मीन तुम्हारी गल्तियों से

भर जाये और फिर मुझ से मिलो लेकिन मेरा शरीक न ठहराओ तो मैं तुम्हारे पास उतनी ही मग्फिरत के साथ आऊँगा कि ज़मीन भर जायेगी। (तिर्मिज़ी)

औरतों को सदक़ा व इस्तिगफार की ताकीदः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया, ऐ औरतो! सदक़ा किया करो और खूब इस्तिगफ़ार किया करो, क्योंकि मैंने तुम को बहुत ज़ियादा दोज़ख़ में देखा है, एक औरत ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम औरतें दोज़ख़ में ज़ियादा क्यों जायेंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लानत बहुत करती हो और शौहर की नाशुक्री बहुत करती हो और मैंने अक़्ल व दीन में कमज़ोर होने के बावजूद ''अना'' पर गलबा पाने वाला भी तुम से ज़ियादा किसी को नहीं पाया, उसने कहा अ़क़्ल के कम होने और दीन के कम होने का क्या मतलब है, फरमाया दो औरतों की गवाही एक मर्द के बराबर है, यह अ़क़्ल का नुक़सान है, और हर महीने नमाज़ की कमी और रोज़े का छोड़ना यह दीन का नुक़सान है।

(मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा .....

4. पिछली आयतों में मूर्ति पूजकों का जो जाहिल और मूर्ख घोषित किया गया बहुत सम्भव था कि वे जाहिल इस पर गुस्सा हो कर अशोभनीय हरकत करते इसी लिए माफ़ करने को कहा जा रहा है और अगर किसी समय मानवीय प्रवृत्ति के कारण उनकी किसी बुरी हरकत पर गुस्सा आये और शैतान चाहे कि दूर से छेड़ करके किसी हानिकारक कार्य पर तैयार कर दे जो उनके खुलक–ए–अज़ीम (महान सुव्यवहार) को देखते हुए गिरी बात हो तो आप तुरन्त अल्लाह की शरण मांगिए, आपकी पवित्रता और मर्यादा के सामने उनकी कोई भी चाल सफल न होगी।

5. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो मासूम हैं, शैतान का गुज़र वहां हो ही नहीं सकता, हाँ परहेज़गारी का हाल यह है कि जब कभी शैतान अपना काम करना चाहता है तुरन्त सावधान हो जाते हैं और उसके नुकसान निगाहों के सामने आ जाते हैं और वे अल्लाह की शरण में आ जाते हैं और जो शैतान के भाई हैं शैतान उनको बहकाने में कोई कमी नहीं करता और यह लोग भी शैतान के अनुसरण में लगे रहते हैं।

6. काफ़िर केवल ज़िद में विभिन्न प्रकार के मुअजिज़ों की मांग में लगे रहते हैं, यहां संकेत है कि कुर्आन से बड़ा मुअजिज़ा और कौन सा होगा इसको ध्यान और शांति से सुनो, फिर आगे साधारण ज़िक्र के कुछ शिष्टाओं का बयान हुआ है, फिर फरिश्तों का उदाहरण दिया गया है जो किसी समय भी अल्लाह की याद से अचेत नहीं होते।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

हिज्री कलेण्डर का बारहवां महीना "जिलहिज्जः"

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

जिल़हिज्जः बड़ा मुबारक महीना है, अल्लाह तआला ने ईमान वालों को साल में दो दिन खुशी मनाने के लिए अता किये हैं, ईद–उल–फित्र, ईद– उल–अज़हा, ईदुल–फित्र पहली शव्वाल को होती है और ईद–उल–अज़हा दस जिलहिज्ज को होती है, ईद–उल–अज़हा को ईदे अज़्हा, ईदे कुर्बां और बक़र ईद भी कहते हैं।

ज़ुलहिज्जः हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत हाजर अलैहिमुस्सलाम की याद भी दिलाता है, इस महीने की आठ ता बारह जिलहिज्ज के दरमियान मक्के में हज होता है जो हज़रत इब्राहीम अलै0 की याद दिलाता है, जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की मदद से कअ़बे की इमारत तैयार की तो अल्लाह के हुक्म से आवाज़ लगाई लोगो! काबा तैयार हो गया है, हज करने आओ, यह आवाज़ अल्लाह ने सारी दुन्या वालों को सुनाई बल्कि आलमे अरवाह में भी सुनी गयी जवाब में बहुत से लोगों ने लब्बैक कहा, जिन लोगों ने लब्बैक कहा उनको हज की सआ़दत मिली और जो बाक़ी हैं उनको मिलेगी, यह हज़ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की याद दिलाता है, हज में लोग ज़मज़म पीते हैं, यह हज़रत इस्माईल और हज़रत हाजर अलैहिस्सलाम की याद दिलाता है। ज़मज़म का चश्मा अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलै0 के लिए जारी फरमाया था, हज में हाजी सफा मरवा के दरमियान सई करते हैं यह हज़रत हाजर की दौड़ को याद दिलाता है, हज़रत हाजर मासूम बेटे को पानी पिलाने के लिए पानी की तलाश में कभी सफा पहाड़ी पर चढ़ जाती हैं तो कभी दौड़ कर मरवा पहाड़ी पर चढ़ जातीं, यह सई हज़रत हाजर की सई की याद दिलाता है, ह़ज में हाजी रमी करता है तीन जगहों पर जमरात को कंकरियां मारता है, यह वही तीन जगहें हैं जहां इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कंकरियां मार कर शैतान को भगाया था फिर हाजी कुर्बानी करता है यह कुर्बानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उस कुर्बानी की याद दिलाता है जब उन्होंने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर अपने लाडले बेटे के गले पर छुरी चला दी थी मगर अल्लाह तआला ने फरिश्ते के ज़रिये हज़रत इस्माईल को हटा कर मेंढा लिटा दिया था और मेंढा ज़ब्ह हुआ था।

अल्लाह ने इब्राहीम अलै0 से जैसे इम्तिहानात लिए वह बेमिसाल हैं इसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर जो इनआमात हुए वह भी मिसाली हैं, अल्लाह तआला ने उन इनआमात का ज़िक्र इशारतन अपने नबी के जरिये हर नमाज़ में रख दिया चुनांचि हर नमाज़ में हमारे लिए जो दुरूद पढ़ना

मसनून हुआ उसमें हम कहते हैं–

अनुवादः– *'ऐ अल्लाह! मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फरमा और उनकी आल पर भी वैसी रहमत जैसी इब्राहीम अलै0 पर नाज़िल फरमाई और उनकी आल पर, बेशक तू हमीद और मजीद है।*

इस दुरूद को दुरूदे इब्राहीमी और दुरूदे अकबर कहते हैं, इसको अगर वज़ीफे के तौर पर नमाज़ से अलग पढ़ें तो बड़ा सवाब मिले लेकिन कुर्आन मजीद में ईमान वालों से जिस दुरूद का मुतालबा है उसमें सलाम का होना लाज़िम है। मिसाल के तौर पर–

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव–व–अला आलिही –व–अलाअस्हाबिही–व–बारिक –व–सल्लिम सलामन कसीरा।"

नौ ज़िलहिज्जः की फज्र की नमाज़ से तेरह जिलहिज्ज की अस्र की नमाज़ तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद मर्दों के लिए बलन्द आवाज़ से तकबीरे तश्रीक़ पढ़ना वाजिब है, औरतें आहिस्ता पढ़ें–

तकबीरे तश्रीक़–

"अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द।"

दस जिलहिज्ज को ईद–उल–अज्हा की दो रकअ़त मख़्सूस नमाज़ पढ़ना वाजिब है, दस जिलहिज्ज की ईद की नमाज़ के बाद से बारह जिलहिज्ज को गुरूबे आफताब से पहले पहले हर आक़िल बालिग़ साहिबे निसाब मुक़ीम मुसलमान पर कुर्बानी वाजिब है, मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं जो हज पर जाते हैं वह अगर आठ जिलहिज्ज को मक्का मुकर्रमा में रहते हुए पन्द्रह दिन या उससे ज़ियादा हो गये हों तो उन पर भी हज वाली कुर्बानी के अलावा माल वाली कुर्बानी वाजिब है, चाहे वह मक्के में करें चाहे अपने वतन में किसी अज़ीज़ से कह कर करवा दें लेकिन अज़ीज़ से कहना ज़रूरी है वरना वाजिब अदा न होगा।

कुर्बानी बकरा, बकरी भेंड़ नर मादा, दुम्बा नर मादा, पड़वा भैंस और ऊँट की होती है गाय की भी होती है, मगर हमारे मुल्क में गाय की कुर्बानी क़ानूनन मना है इसलिए गाय की कुर्बानी हरगिज़ न करें।

बकरा बकरी, भेंड और दुम्बे की उम्र कम से कम एक साल हो यानी दाँते हों, पड़वा और भैंस की उम्र कम से कम दो साल हो और वह दाँते हों।

कुर्बानी का जानवर मोटा ताज़ा बे ऐब हो, बधिया जानवर अगरचि उसके खुसिये निकाल दिये जाते हैं मगर वह ऐबदार नहीं होता।

छोटा जानवर बकरी, भेंड़, वगैरह एक आदमी की तरफ से एक जानवर ज़ब्ह होगा, पड़वे या भैंस में सात हिस्से तक हो सकते हैं लेकिन अगर कोई एक पड़वा एक हिस्से के लिए ज़ब्ह करे तो जाइज़ है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सौ ऊँट ज़ब्ह किये थे।

कुर्बानी का गोश्त खुद खाये, अज़ीज़ों को खिलाये, बेहतर है एक तिहाई गोश्त गरीब मुसलमानों में तकसीम करे, कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिम को भी दिया जा सकता है, कुर्बानी की खाल

शेष पृष्ठ ...35....पर

मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने का एलान

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

इस्लाम का मानवता के प्रति तीसरा महान उपकार यह है कि उसने मनुष्य के शालीन व सर्वोत्कृष्ट प्राणी होने की घोषणा की। हज़रत मोहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पूर्व मनुष्य अपमान व अनादर के गर्त में गिर चुका था और वसुन्धरा पर उससे अधिक तुच्छ तथा हीन वस्तु नहीं रह गयी थी। कुछ पवित्र जानवरों तथा वृक्षों, जिनका सम्बन्ध पौराणिक कथाओं और धार्मिक विश्वास से है, के प्रति मनुष्य अधिक आदर सत्कार व्यक्त करता था और मनुष्य की अपेक्षा उन्हें सुरक्षा का ज़ियादा हक़दार समझा जाता था। चाहे उसके लिए अबोध व बेगुनाहों की बलि ही क्यों न देनी पड़े। ऐसे पेड़ व पत्थरोंके आगे मनुष्य की बलि निःसंकोच चढ़ा दी जाती थी। हमने इसके घिनौने दृष्य इस बीसवीं शताब्दी में भारत जैसे कुछ विकसित देशों में भी देखे हैं।

हज़रत मोहम्मद सल्ल0 ने मानवता को उसकी शालीनता, शराफत व सज्जनता वापस की और उसकी खोई प्रतिष्ठा को बहाल किया और घोषणा किया कि मानव इस सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है और यहाँ उससे अधिक प्रतिष्ठा, प्रेम व सुरक्षा की हक़दार कोई अन्य वस्तु नहीं। कुरआन ने घोषणा कीः–

अनुवादः– *''वही है, जिसने तुम्हारे लिए धरती की सबकी सब चीजें पैदा कीं।''*

(सूरः बक़रः 29)

अनुवादः– *''और हमने आदम की सन्तान को इज्जत दी और उन्हें थल और जल दोनों में सवार किया और उनको उत्कृष्ट चीजें प्रदान कीं। और हमने उनको अपनी बहुत सी कृतियों पर श्रेष्ठता दी।''*

(सूरः अलइस्रा–70)

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमायाः–

अनुवादः– *''खुदा की मख़लूक़ (सृष्टि) ख़ुदा की कुंबा (परिवार) है और अल्लाह को सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके कुंबा के साथ अच्छा व्यवहार करता है।''*

मनुष्य के सत्कार और उसकी सेवा से ईश्वर का सानिध्य प्राप्त किया जा सकता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा मानव सेवा के सम्बन्ध में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 द्वारा बयान की गयी यह 'हदीस' बड़ा व्यापक अर्थ रखती है। अल्लाह के रसूल ने फरमायाः–

''अल्लाह तआला क़यामत में पूछेंगे, ऐ आदम की सन्तान! मैं बीमार पड़ा मगर तूने मेरी अयादत नहीं की? आदमी कहेगा या रब! आप तो सारे जहान के पालनहार थे, मैं आपकी अयादत कैसे करता? इस पर

अल्लाह तआला फ़रमायेंगे, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरा अमुक बन्दा बीमार हुआ मगर तुमने उसकी अयादत नहीं की, अगर तुम उसकी अयादत करते तो मुझे उसके पास पाते।

ऐ आदम की औलाद! मैंने तुम से खाना माँगा तो तुमने मुझे खिलाया नहीं? आदमी कहेगा हे! मालिक आप तो दुन्या के पालनहार थे, मैं आपको कैसे खिलाता? अल्लाह तआला कहेंगे कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुम से खाना माँगा मगर तुमने उसे खाना नहीं दिया, अगर तुम उसे खिलाते तो मुझे उसके पास पा लेते। ऐ आदम की सन्तान! मैंने तुम से पानी माँगा मगर तुम ने मुझे पानी नहीं दिया? आदमी कहेगा हे अल्लाह! आप तो सारे जहान के पालनहार हैं मैं आपको कैसे पानी पिलाता? अल्लाह कहेगा कि मेरे अमुक बन्दे ने तुम से पानी मांगा मगर तुमने उसे पानी नहीं दिया अगर तुम उसे पानी पिलाते तो मुझे उसके पास पाते।''

क्या मानव की उत्कृष्टता का इससे अधिक स्पष्ट और दो टूक किसी घोषणा की कल्पना की जा सकती है? और क्या प्राचीन व आधुनिक संसार के किसी धर्म व दर्शन में मनुष्य को कभी ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई?

हज़रत मोहम्मद सल्ल0 ने बताया कि ईश्वर की दया व कृपा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि धरती वालों पर दया की जाये। आपने फ़रमायाः—

अनुवादः—*''रहम (दया) करने वाले पर रहमान भी रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो तुम पर आसमान वाला रहम करेगा।''*

हज़रत मोहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले एक—एक व्यक्ति की इच्छा पर हज़ारों इन्सानों का जीवन निर्भर था। कोई बादशाह उठता और देशों, क़ौमों, खेतों और आबादियों को तहस—नहस करता चला जाता, और राजहट अथवा राजनीतिक प्रतिष्ठा के लिए जल थल को बरबाद कर के रख देता।

सिकन्दर महान (356—324 ई0 पूर्व) आन्धी पानी की तरह उठता है और ईरान, सीरिया, तटीय देशों, मिस्र और तुर्किस्तान का बड़ा भाग तहस—नहस करता हुआ उत्तरी भारत पहुंच जाता है। वह विजय की इस लम्बी यात्रा में सदियों पुरानी और विकसित सभ्यताओं को धूल—धूसरित कर देता है। 'ज्यूलियत सीज़र' और अन्य विजेता और सेनापति जैसे 'कार्ट नेज' का 'हनीबाल' व दूसरे बादशाह मानव बस्तियों में इस प्रकार घुसते हैं और हज़ारों लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतारते चले जाते हैं जैसे अभ्यस्त व बेदर्द शिकारी एक तरफ़ से जंगली जानवरों का शिकार करते हैं।

मानव जीवन के साथ यह खिलवाड़ व तबाहकारी हज़रत ईसा अलै0 के अभ्युदय के बाद भी जारी रही। अतएव उनके बाद के मानवता पर अत्याचार करने वालों में 'नेरों' जैसे लोगों ने अपने देशवासियों को भी अपने अत्याचार का निशाना बनाया, और अपनी माता और पत्नी को भी नहीं छोड़ा। यही 'नेरो' रोम के अग्निकाण्ड का भी जिम्मेदार है। जब रोम आग की लपटों में जल रहा था तो वह चैन की बाँसुरी बजा रहा था।

योरोप की जनजातियाँ अर्थात् पश्चिमी व पूर्वी गाथ व विन्डाल आदि जो हज़रत मोहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में सक्रिय थे, वह दुन्या की बड़ी–बड़ी विकसित राजधानियों को तहस नहस कर देते, और भू–तल पर बड़े पैमाने पर आतंक फैला देते थे।

अरबों की नज़र में मानव जीवन की गरिमा इतनी कम थी कि युद्ध और मारकाट उनके लिए खेल बन गयी थी और साधारण सी घटना युद्ध का कारण बन जाती थी। 'बनी वायल' के दो क़बीलों 'बकर' व 'तग़लिब' के बीच चालीस साल तक लड़ाई का सिलसिला जारी रहा। बात केवल इतनी थी कि 'कुलैब' ने 'बसूस' की ऊँटनी के थन पर तीर मार दिया था जिससे उसका खून दूध में मिल गया था इसके कारण 'जस्सास' ने 'कुलैब' की हत्या कर दी और 'बकर' व 'तग़लिब में लड़ाई छिड़ गयी। इस गृह युद्ध के बारे में 'कुलैब' का भाई 'अलमहलहल कहता है:–

''आदमी मिट गये, माँयें बे औलाद हो गयीं, बच्चे अनाथ हो गये, आँसू रुकने का नाम नहीं लेते और मुर्दे बेकफ़न दफ़न पड़े हैं।''

इसी प्रकार 'दाहिस' व 'गबरा' के युद्ध का कारण यह हुआ कि 'कैस' और 'हुज़ैफ़ा' के बीच घोड़ों की दौड़ का मुकाबला हुआ जिसमें 'क़ैस' का घोड़ा 'दाहिस' से आगे निकल गया था इस पर एक असदी ने 'हुजैफ़ा' के कहने पर घोड़े को छेड़ा और उसके चेहरे पर तमांचा मारा जिसके कारण वह घोड़ा पिछड़ गया। इसके बाद बदला और मारकाट, और क़बीलों के देश छोड़ने का एक सिलसिला चल पड़ा और इसमें हज़ारों लोग मारे गये।

हज़रत मोहम्मद सल्ल0 के समय के 'गज़वात' की कुल संख्या सत्ताईस या अट्ठाईस है और 'सराया' **(Rading Parties)** की संख्या साठ तक पहुंचती है। इनमें युद्धों के इतिहास को देखते हुए, सबसे कम ख़ून बहाया गया। इन लड़ाइयों का उद्देश्य मानव जीवन की रक्षा और उसके हितों की रक्षा करना था और इसके साथ ही व आचार्य संहिता की इस प्रकार पाबन्द थीं कि मानव–जाति के दुख देने के बजाय उसके आदर का हुक्म रखती थीं।

इस्लाम ईमान व अपनी नैतिक शिक्षा के द्वारा मनुष्य की शालीनता व श्रेष्ठता की ऐसी भावना जागृत करता है जिससे एक मुसलमान इस मामले में बहुत भावुक हो उठता है। वह इन्सान को किसी हाल में जानवरों के स्तर पर नहीं उतारता और न वह उनसे दानव जैसा व्यवहार पसन्द करता है और न उन्हें अपने आपको बड़ा बताने के लिए गुलाम बनाता है। वह अपने और दूसरे इन्सानों के बीच कोई अन्तर नहीं समझता कि उनसे अपमानजनक व्यवहार करे। यहां इसका एक दृष्टिान्त प्रस्तुत किया जाता है:—

''हज़रत अनस रज़ि0 बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत उमर रज़ि0 के पास थे कि उनके पास मिस्र के एक 'किब्ती' ने फ़रियाद की। आपने पूछा तो उसने कहा 'अमर बिन अलआस' ने मिस्र में घुड़ दौड़ करायी जिसमें मेरा घोड़ा आगे निकल गया और लोगों ने उसे देखा भी। मगर मोहम्मद, (अमर बिन अलआस के बेटे) कहने लगे कि यह मेरा घोड़ा है, वह जब निकट आये तो मैंने उन्हें पहचान कर कहा कि नहीं, वह मेरा घोड़ा है। इस पर वह मुझे कोड़ों से मारने लगे। उन्होंने कहा कि जानते नहीं कि मैं 'शरीफ़ ज़ादा' हूँ। इस पर हज़रत उमर रज़ि0 ने उससे कहा 'अच्छा बैठो'। फिर 'अमर बिन अलआस को लिखा कि मेरा ख़त देखते ही तुम और तुम्हारे बेटे मोहम्मद हाज़िर हो जायें। बयान करने वाला कहता है कि अमर बिन अलआस ने अपने बेटे को बुला कर पूछा कि क्या तुमने कोई अपराध किया है? उसने कहा 'नहीं, तो उन्होंने कहा तब क्यों उमर ने तुम्हारे बारे में लिखा है? इसके बाद वह हज़रत उमर रज़ि0 के पास हाजिर हो गये। हज़रत अनस कहते हैं कि हम हज़रत उमर रज़ि0 के पास ही थे कि अमर बिन अलआस को एक लुँगी और चादर में आते देखा तो हज़रत उमर रज़ि0 ने हुक्म दिया कि दुर्रा ले कर इस 'शरीफ़ ज़ादे' की ख़बर लो। बयान करने वाला कहता है कि उसने उसे अच्छी तरह मारा, फिर हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि अमर के भी सर पर घुमाओ, क्योंकि इन्हीं के बलबूते पर इसने तुम्हें मारा था। मिस्री कहने लगा कि मैं मारने वाले को मार चुका। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि अगर तुम इन्हें मारते तो मैं बीच में न पड़ता जब तक कि तुम ही न इन्हें छोड़ते। फिर फरमाया, 'अमर! तुमने लोगों को कब से गुलाम बनाया, हालांकि उनकी माँओं ने तो उन्हें आज़ाद जना था'? फिर मिस्री को सम्बोधित करके कहा कि इतमीनान से जाओ, अगर कोई बात पेश आये तो मुझे लिखना'।

❖❖❖

मनोरंजन के संसाधनों में इस्लाम का उदार स्वभाव

—मौलाना सय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

मनोरंजन और तफ़रीह इंसानी ज़रूरतः–

खेल तमाशे, तफ़रीह व दिल्लगी का बेहतरीन और प्रभावी साधन हैं जिनका मक़सद अपने ग़मों को दूर करना, थके मांदे बदन में ताज़गी और सक्रियता पैदा करना होता है, थके और बुझे दिलों को बहलाने और दुखों को दूर करने के लिए लोगों ने विभन्न प्रकार के साधन अपना रखे हैं, ये विविद्धता और मनोरंजन के अलग अलग तरीक़े हर दौर में पाये जाते रहे हैं, क्योंकि तफरीह और मनोरंजन इंसानी ज़रूरत है, खासतौर से उन लोगों के लिए ये ज़रूरत और बढ़ जाती है जो शारीरिक मेहनत–मशक़्क़त और सेवा के काम करते हैं और उसको पूरा कर के थक जाते हैं, समाज में इस तरह के लोगों की बड़ी तादाद पाई जाती है जिनमें विद्वान, साहित्यकार, बुद्धिजीवी, स्कॉलर्स और कर्मचारी व मज़दूरपेशा लोग भी शामिल हैं, जिनमें तक़रीबन सभी लोग मानसिक व शारीरिक मेहनत व मशक़्क़त वाले काम करते हैं।

इस्लामिक विचारः–

तफ़रीह व थकावट दूर करने में इस्लाम की राय सकारात्मक है, हुज़ूर अकरम (स०) ने खेल कूद के ज़रिये ऊर्जा हासिल करने के बारे में फ़रमायाः– "अपने दिलों को रुक रुक कर आराम दो और उस के लिये दुर्लभ और युक्ति आधारित चुटकुले तलाश करो, इसलिए कि दिल भी उकताते और थक जाते हैं जिस तरह बदन थक जाता है। (रूहुल बयान, सूरह लुक़मान :7/50)

इस्लाम ने दिलों की राहत व खुशी के लिए जायज़ चीज़ों व संसाधनों को अपनाने का आह्वान किया है, इस्लाम ने तीरंदाज़ी, शिपिंग और घुड़दौड़ को खास महत्व दिया है, हुज़ूर (स०) ने फ़रमायाः

"अल्लाह तआला के ज़िक्र से जो चीज़ ख़ाली हो वो बेकार खेल तमाशा है, हाँ चार चीज़ें इससे अलग हैंः

1– तीरंदाज़ी के वक़्त दौड़ना, 2– घोड़े की परवरिश व देखभाल, 3 – अपने परिवार के साथ हंसी मज़ाक़– व दिल लगी करना, 4– तैराकी सीखना। (मुसनद अहमद) और हज़रत उमर (रज़ि०) से रिवायत हैः "तुम अपनी औलाद को तैराकी, तीरंदाज़ी और घुड़सवारी सिखाओ।" (मौसूअतुर रद्द अला मज़ाहिबिल फिक्रियहः जिल्द 4/पृष्ठ 341)

पुराने उलमा की रायेंः–

किताबुल बुखला के लेखक मशहूर अरबिक साहित्यकार जाहिज़ ने अपनी किताब में इस तरफ़ इशारा करते हुए लिखा है, संबोधित कुछ लोगों की शोध के मुताबिक़ फ़त्ह बिन ख़ाकान है जो मुतवक्किल का सलाहकार व मंत्री था– "आपने मुझ से कंजूसों की दुर्लभ कहानियां, हरीसों के हीलेबाज़ियाँ, मज़ाक़, तफरीह और संजीदगी के बारे में कुछ बयान करने की फरमाइश की ताकि उसके ज़रिये आपका दिल बहले, तबियत हलकी हो और तफरीह का मौक़ा मिले, इसलिए कि लगातार मेहनत थकान पैदा कर देती है, ऐसे व्यक्ति के लिए कटाक्ष व मज़ाक़ और तफरीह का साधन ज़रूरी

होता है "(किताबुल बुख़ला :जिल्द 1/पृष्ठ 17) सहल बिन हारुन का कथन है कि मज़ाक़ का एक वक़्त और एक जगह होती है और गंभीरता और मेहनत व मशक़्क़त का वक़्त व जगह अलग होती है इन दोनों में कमी बेशी हो जाए तो, अगर ज़्यादती हो जाए तो बिगाड़ पैदा हो जाता है और अगर कमी हो तो उससे ऐब पैदा हो जाता है, इमाम ग़ज़्ज़ाली (रह०) अपनी मशहूर किताब "एहया–ए–उलूमिद्दीन" में मज़ाक़ के बारे में लिखते हैं कि बराबर मज़ाक़ या उससे पूरे तौर से बचना दोनों बातें निंदनीय हैं लेकिन जो मज़ाक़ इन दोनों बातों से खाली हो वो निंदनीय नहीं है, हदीस में आता है :

"सहाबा (रज़ि०) ने पूछा या रसूलल्लाह! आप हम से मज़ाक़ भी कर लेते हैं तो आप (स०) ने इरशाद फ़रमायाः– हाँ हाँ, मगर मैं कभी ग़लत बात नहीं कहता" (शामाइले तिर्मिज़ी,पृष्ठ 128) इससे किसको इंकार हो सकता है कि तफरीह व मज़ाक़ इंसान के अंदर स्फूर्ति व ताज़गी पैदा करने के लिए एक अनिवार्य तत्व है।

मनोरंजक संसाधनों के फायदेः–

पिछले ज़माने में मनोरंजक संसाधन न सिर्फ़ ये कि मनोरंजन और आनंद के साधन हुआ करते थे, बल्कि इससे शारीरिक व्यायाम जैसे और भी बहुत से फायदे हासिल होते थे, उस वक़्त इंसान जो खेल पसंद करता था उससे शारीरिक ऊर्जा में और वृद्धि हुआ करती थी, उसमें मेहनत व मशक़्क़त की ज़रूरत हुआ करती थी मसलन दौड़, तैराकी, तीरंदाज़ी, साथ ही प्रतिभा व बुद्धिमता जैसी चीज़ें और उनको बल प्रदान करने वाले अन्य संसाधन, इसके लिए ऐसे खेलों का चुनाव किया जाता जिनसे बुद्धिमता व प्रतिभा में बढ़ोतरी होती और ज्ञान व साहित्य में इज़ाफ़ा होता है, इसमें कथाकारी, कहानियां व वृत्तांत, अलिफ़ लैला और दूसरी वो किताबें जो युक्ति व आनंदमयी होती थीं जैसे "कलीला व दिमना" और "किताबुल बुखला" इन किताबों को विद्वानों और साहित्यकारों ने इन्हीं उद्देश्यों के लिए लिखा और बहुत से नेक स्वभाव के लेखकों ने ऐसी कहानियां लिखीं जो एक ही समय में दीक्षा व मनोरंजन दोनों काम करती थीं, हर भाषा व साहित्य में खासतौर से अरबी, उर्दू में इस क़िस्म की कहानियों और कथाओं का अनमोल खज़ाना मौजूद है।

काव्य व साहित्य की सभाएं भी इस मक़सद के लिए बहुत ज़्यादा आयोजित होतीं और तरही मुशायरे और काव्य गोष्ठियां होती थीं, इसी तरह पहेलियाँ बूझने और जटिल गुत्थियों को हल करने और पराक्रम की गाथाएं सुनाने और पर्यटन व सैर सपाटों की कहानियां बयां करने की मजलिसें व बैठकें होती थीं।

पश्चिम का मनोरंजन के बारे में विचारः–

लेकिन इस दौर में यूरोपीय सभ्यता व संस्कृति के प्रभाव से तफ़रीह व मज़ाक़ का तरीक़ा बिलकुल बदल गया है, अब ये साधन व सरगर्मियां, वैज्ञानिक, वैचारिक और शारीरिक फायदों से खाली हो गयी हैं, अब इनका मक़सद सिर्फ़ मनोरंजन रह गया है और वो चीज़ें जो

पिछले ज़माने में कुछ लोगों के साथ ख़ास थीं अब आम हो चुकी हैं और सोसाइटी का हर व्यक्ति उसके प्रभाव में आ गया है और उनका असर काम और शिक्षा पर पड़ने लगा है, दूसरे उनमें मानवीय व नैतिक मूल्यों का लेहाज़ भी ख़त्म हो गया है।

मनोरंजक साधनों के इस रुझान का यूरोप के प्राचीन इतिहास और परम्पराओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है, प्राचीन काल में रोम व यूनान तफ़रीह के नाम पर बर्बरतापूर्ण तरीके अपना रखे थे, जैसे इंसान को जानवर से लड़ाना, इंसानी सिर में आग लगा कर चलने का तमाशा देखना भूखे शेर के पिंजड़े में इंसान को ड़ाल कर उसके तड़पने से आनंदित होना।

वर्तमान खेलः–

हमारे ज़माने में खेल भी फायदे से ज़्यादा नुकसान पहुंचाने का काम अंजाम दे रहे हैं, वो नवजवानों के ज़ेहनों को प्रभावित कर रहे हैं, ये क्षेत्रीय और सीमित रहने के बजाए रेडियो और टीवी के ज़रिये वैश्विक हैसियत अपना चुके हैं, और शहर व देहात के लोग उन प्रोग्रामों को देख कर आनंदित होते हैं उन्हें स्कूलों, लाइब्रेरियों और कारखानों में देखा जाता है, मैच के दौरान शिक्षा और दफ़्तरी काम प्रभावित होते हैं, खिलाडियों की ज़िन्दगी और खेल के ज़रिये उनके आर्थिक खुशहाली के चर्चों और उनकी सभ्यता व किरदार से नवजवान प्रभावित होते हैं उसका असर ये होता है की पेशावर कर्मचारी अपने कामों से और विद्यार्थी पठन पाठन से लापरवाही बरतते हैं और सारे काम बाधित हो जाते हैं।

इन मुक़ाबलों और मैचों से भी एक क़दम आगे है टीवी के प्रोग्राम और फ़िल्में वीडियो, वीडियो गेम्स, ये न सिर्फ़ नैतिक मूल्यों व संस्कारों को प्रभावित करते हैं बल्कि इनके ज़रिये ज्ञानात्मक योग्यता और गॉडगिफ्टेड लाभान्वित होने की योग्यता भी समाप्त हो जाती है, वर्तमान समय में ये साधन इतने सार्वजनिक हो गए हैं कि हवाई अड्डों, प्लेट फार्मों, सड़कों, पार्कों और स्कूल व कॉलेजेज में टीवी सेट लगा दिए गए हैं, होटलों व क्लबों का तो कहना ही क्या, ये सारे ही प्रसारण संस्थाएं भावनाओं व एहसासों को उत्तेजित करने वाले प्रोग्राम प्रस्तुत करते हैं चाहे वो इंसान को अमानवीय हरकतों, अपराध व जुल्म ज़्यादती पर उभरते हों और इंसान की कार्यक्षमता को बढ़ने के बजाए उसकी कार्यकुशलता व एकाग्रता को कम करते हैं बल्कि निलंबित कर देते है।

मनोरंजन का दायराः–

इससे किसी को मतभेद नहीं कि तफरीह व मनोरंजन एक इंसानी ज़रूरत है, लेकि एक सीमित दायरे में आवश्यकतानुसार कुछ नियम व शर्तों के साथ, इसलिए की तफरीह तफरीह है, न की जीवन–उद्देश्य ये जीवन का एक अंश है न कि जीवन, आज नई संस्कृति ने मनोरंजन व तफ़रीह को हद से ज़्यादा महत्व दे रखा है, और ये उच्च वर्ग का एक फ़ैशन बन गया है, साथ ही इस ने अब अपनी उपयोगिता व महत्व भी खो दिया है, आज इन संसाधनों पर ऐसे व्यक्तियों व सस्थाओं का वर्चस्व है जिनका उच्च मूल्यों और आदर्श नैतिकता धारक

होना तो दूर की बात है, वो तो इन मूल्यों व नैतिकताओं के विद्रोही नज़र आते हैं।

मीडिया का जादूः-

इन संसाधनों के हानियों में उस समय बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा हो गया जब इसका सम्बन्ध मीडिया से हो गया और घर घर मनोरंजन के साधन पहुंच गए और सभ्य व असभ्य, अमीर व ग़रीब सभी इन साधनों का इस्तेमाल करने लगे यहाँ तक की मज़दूर पेशा भी अपने घरों में इस जान की आफ़त को ले आये जो उनके लिए शायद किसी "महान वरदान" से कम नहीं, देखते ही देखते ये साधन समाज की एक ऐसी ज़रूरत बन गए कि उनके बिना जीना मुश्किल समझा जाने लगा है और इनको सभ्यता व संस्कृति का मानक व पैमाना समझा जाने लगा है, फलस्वरूप ये साधन जो विभिन्न रूपों में मौजूद हैं चरित्र व व्यवहार को बिगाड़ने पश्चिमी सभ्यता के रंग में समाज को रंगने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे, जिंदगी के उच्च स्तर को पस्त करने लगे।

ब्रैनवॉश के साधनों में भ्रष्ट तत्वः-

पिछले ज़माने में हिम्मत व साहस, ईमानदारी और मर्दानगी व सच्चाई, त्याग व बलिदान, ज्ञान की खोज व तलाश, कौशलवान लोगों की क़द्र व आदर और उनकी ख़ोज में मशक़्क़त, पर्यटन और परिश्रम, सिद्धांतवाद और सिद्धांतों के लिए बड़े से बड़े बलिदान की गाथाएं बयान की जाती थीं, और बचपन ही से उन कहानियो की रौशनी में मन बनाये जाते थे, इस के मुक़ाबले में वर्तमान समय में ऐसी मिसालें और नमूने पेश किये जाते हैं जो इन सारी विशेषताओं से खाली होते हैं बल्कि उनकी ज़िंदगी में इसके विपरीत प्रवृत्तियां और कार्य पाए जाते हैं, शिक्षा व दीक्षा से जिस मन को तैयार किया जाता है, मनोरंजन के साधनों से उस मन मस्तिष्क को बदल दिया जाता है और उसमें भ्रष्ट तत्व दाखिल कर दिये जाते हैं इस तरह समाज के अच्छे तत्व कम और कमज़ोर हो जाते हैं और भ्रष्ट तत्व ताक़तवर हो जाते हैं।

इस्लाम का उदार रवैयाः-

इस्लामी शिक्षा पद्धति में इस पक्ष को अपने विचार के अनुरूप अपनाना चाहिए जिस से उसके लाभदायक पक्ष बाक़ी रहें और भ्रष्ट तत्व से समाज सुरक्षित रहे, इसके लिए उसकी सीमायें और ज़रूरत और नैतिक अवश्यक्ताओं का लेहाज़ रखना होगा, इस्लाम की राय सुधार की है न कि बदल देने की, संतुलन की है न कि कमी ज़्यादती की।

इस्लाम ने व्यवसाय के बारे में जो सिद्धांत निर्धारित किये हैं वही सिद्धांत मनोरंजन के साधनों पर भी लागू होते हैं, अल्लाह तआला का फरमान है :- वो ऐसे लोग हैं कि कारोबार व खरीदो फरोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करते।

(सुरः नूर :37)

उस शर्त को सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर भी लागू करना चाहिए कि वो इस्लामिक शिष्टाचारों की परिधि में हों और आवश्यकतानुसार हों और उनकी समयावधि भी निर्धारित हो जो दीनी कर्तव्यों

शेष पृष्ठ....33....पर

इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

उम्मते इस्लामिया आज जिस नाज़ुक दौर से गुज़र रही है वह इस उम्मत की तारीख़ में बहुत अहम और तश्वीशनाक मर्हला है, मुसलमान जहां भी पाये जाते हैं चाहे वह इस्लामी मुल्क हों या गैर इस्लामी मुल्क, हर जगह वह कमज़ोर, पसमांदा मज़लूम और ज़ख़्म ख़ूरदा हैं, इनकी हालत उस पराजित फौज की तरह है जो मैदाने जंग से पस्पा होकर लौटे और हमेशा के लिए उस पर ज़िल्लत व कमतरी का एहसास मुसल्लत हो जाये, जिस मुल्क को आप चाहें देख लें और जिस इलाक़ा पर चाहें नज़र दौड़ा लें, सब से ज़ियादा कमज़ोर और हताश सिर्फ मुसलमानों का तबक़ा मिलेगा, शुमाल से जुनूब और मशरिक़ से मगरिब तक जहां चाहिए मुसलमानों की मगलूबियत मज़लूमियत, उनके एहसास कमतरी की दास्ताने ताज़ा सुन और पढ़ लीजिए।

अगरचे बाज़ मुस्लिम ममालिक ऐसे भी हैं जहां मुसलमान बजाहिर ख़ुशहाल, गालिब और ताक़तवार हैं, लेकिन अंदरूनी तौर पर वह भी ज़ेहनी गुलामी, एहसास कमतरी में मुब्तला हैं वह बातिनी हैसियत से बिल्कुल शिकस्त खाये हुए और डरे हुए हैं, उन पर दूसरी तरक़्की याफ़्ता कौमों के अफ़कार व नज़रीयात का ऐसा ग़लबा है कि वह ज़बाने हाल से इस्लाम को एक बोसीदा मज़हब, एक रज्अ़त पसंदाना नज़रिया और एक पुराना निज़ाम तसव्वुर करते हैं।

यह वह सूरते हाल है जो मुसलमानों के लिए न सिर्फ तश्वीशनाक बल्कि मिल्लत के शीराज़ा को बिल्कुल मुंतशिर और उम्मत के इत्तिहाद को पारा—पारा कर देने के लिए काफी है, इस सूरते हाल का मुक़ाबला करने के लिए अगरचे बहुत से ग़मगुसाराने मिल्लत और हमदर्दाने उम्मत अपनी अपनी हैसियत के मुताबिक़ काम कर रहे हैं और तमाम इस्लामी और दीनी जमातें उन नाखुशगवार हालात को महसूस कर रही हैं और उनको बदलने के लिए जद्दोजहद में मसरूफ हैं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि इस उम्मत की तारीख का वह नाज़ुक तरीन मरहला है जिससे गुज़रने के लिए हमारी यह तमाम कोशिशें उस वक़्त फल—फूल सकती हैं जब हम कमतरी, मगलूबियत और मज़लूमियत का एहसास ख़त्म करके अपने आप को इस मंसबे इमामत व क़यादत का अहल बना लें जो हमारे और सिर्फ हमारे लिए मख़सूस है और जब हम सही मानों में जानशीन ख़ातिमुल अंबिया बन कर ख़िलाफत अर्ज़ी की ज़िम्मेदारी संभालें जो सिर्फ हमारा हिस्सा हैं।

लेकिन आज इस तरक़्क़ी याफ़्ता दुन्या में हमने अपना मुकाम सब से पीछे रखा है, हम भौतिकवादी

क़ौमों के गुलाम बन कर ज़िन्दगी गुज़ारने में फ़ख़्र महसूस करने लगे हैं, हम इस ख़ालिस माद्दा परस्त तहज़ीब की तक़्लीद और ख़ोशा चीनी को तरक़्क़ी और तमद्दुन की अलामत समझने लगे हैं, हमने यह तै कर लिया है, कि इस दुन्या में ज़िन्दा रहने के लिए उन क़ौमों की इत्तिबा व तक़्लीद वक़्त का एक अहम तरीन फरीज़ा है और मस्लहत का तक़ाज़ा है।

तालीम याफ़्ता मुसलमानों का एक तबक़ा वह भी है जो अपने मज़हब की गैरत और उस का एहतिराम अपने दिल में रखते हुए मौजूदा दौर में इस्लामी निज़ामे हयात को नाकाफी और उसकी तमाम तालीमात को नाकाबिले अमल तसव्वुर करता है उसका ख़्याल है कि इस्लामी निज़ाम को बरपा करने के लिए हमें बहुत पीछे लौटना चाहिए और उस मुआशरा को बरूए कार लाना चाहिए जो इस निज़ाम को क़बूल करने की सलाहियत रखता हो, और जो वाक़ई और अमली ज़िन्दगी में इससे मुस्तफ़ीद होने के जज़्बात से मामूर हो, उनके नज़दीक मौजूदा तहज़ीब और मौजूदा जमाने की सक़ाफत व उलूम का सैलाब अपने भंवर से निकलने की गुंजाइश नहीं रखता, वह कहते हैं कि इस तरक़्क़ी के दौर में सिर्फ इतना कर लेना काफी है, कि नज़रियाती तौर पर आप मज़हब को मानें और उसकी क़ाबिले अमल तालीमात पर अमल कर लें, उनके नज़दीक ऐसे ज़माने में नमाज़ व रोज़ा और दीगर फ़राइज़ का पूरा कर लेना ही बहुत बड़ा दीनी काम है बल्कि मौजूदा ज़माने का सबसे बड़ा जिहाद है।

यही वह शिकस्त खूरदा जेहनीयत है जो मग़रिब की तहजीब, उसकी तरक़्क़ियों और उसकी माद्दी पेश कदमियों से डरी हुई है, जो किसी हाल में इसके बिलमुक़ाबिल आने की रवादार नहीं, वह मग़रिब को तरक़्क़ी के उस नुक़्त–ए–उरूज पर तसव्वुर करती है जिसके बाद कोई मंज़िल नहीं, और जो सिर्फ क़यादत की मंज़िल हो सकती है जिसके सामने सारी मज़हबी, अख़्लाकी और इंसानी कदरें खेल बन कर रह जाती हैं।

दूसरा तबक़ा जो तमाम इस्लामी और गैर इस्लामी मुल्कों में जहां भी मुसलमान मौजूद हैं वह है, जिसने हालात के सामने सिपर डाल दी है, और उसका ख़्याल है कि मौजूदा दौर में माद्दीयत, इल्हाद, और तमाम शैतानी ताक़तें इस क़द्र ताक़तवर हो चुकी हैं कि उनके सामने मज़हब एक कमज़ोर नज़रिया बन कर रह गया है, और जिसके लिए मस्जिद के गोशों, या अज़ान के मिनारों या ख़ुतब–ए–जुमा के मिम्बरों या बाज़ मज़हबी रस्मी आयोजनों से आगे निकलने की इजाज़त नहीं है, वह मज़हब को ज़िन्दगी के लिए लाज़िम, उसकी तालीमात को इन्सानियत का नजात दहिन्दा, और उस की बरतरी व अफ़ज़लियत का एतराफ़ करते हुए हालात के सामने अपने आपको मजबूर तसव्वुर करता है, और अपनी ज़ाती ज़िन्दगी तक इस्लाम के महदूद रखने को बहुत काफी समझता है।

लेकिन इस बिगड़ी हुई दुन्या और तरक़्क़ी के

आख़िरी नुक़्ता तक पहुँची हुई इस तहज़ीब के धारों में एक तबक़ा वह भी मौजूद है जो हर हाल में इस्लामी निज़ाम को क़ाबिले अमल और इसी को इंसानियत के सारे दुख दर्द का इलाज तसव्वुर करता है, वह हालात से मुकाबले के लिए उन तमाम तदबीरों और वसाइल को प्रयोग में लाता है जिन की इस्लाम इजाज़त देता है और उसके लिए हिम्मत अफ़्ज़ाई करता है।

यह उन दाईयों और दाईयाना जज़्बा रखने वाले उन अफ़राद का तब्का है जो इस्लाम की सही फहम और उसके सही मंशा व मुराद से वाकिफ़ हैं, वह यक़ीन रखता है कि दुन्या का सारा बिगाड़, सारी ख़राबियाँ और हर तरह की बुराईयों, और फसादात का स्रोत मज़हब से बे तअ़ल्लुकी है और उस खुदा बेजार तहज़ीब का नतीज़ा है जो आज सारी दुन्या पर मुसल्लत है।

यही वह तबक़ा है जो भौतिकवादी हुकूमतों, और उनके पीछे चलने वाली तमाम हुकूमतों की नज़र में बहुत ज़ियादा नापसन्दीदा और सज़ा के क़ाबिल हैं, यह पुर जोश और ईमान व अमल के जज़्बा से लबरेज़ वह अफ़राद हैं जो इस्लाम की हक़्क़ानीयत, उसकी अबदीयत, उसकी हमा गीरियत और उसके बुलन्द तसव्वुरात पर पुख़्ता ईमान रखते हैं, जो मुंकर को देख कर खुश नहीं रह सकते, जो गुनाहों को फलते–फूलते हुए देख कर गफलत नहीं बरत सकते, जिनकी आखिरी तमन्ना इस्लाम की सर बुलंदी है, जो ईमान की ज़िन्दगी और खुदा और रसूल की तालीमात पर अमल पैरा होने वाले हल्क़ा को वसी करके ज़िन्दगी में अल्लाह के क़ानून को नाफिज़ होता हुआ देखना चाहते हैं और वह हर मरज़ का इलाज इस्लाम और सिर्फ इस्लाम को समझते हैं।

इस तबक़ा का वजूद आज की हर हुकूमत और हर इक़्तिदार की राह में सब से बड़ी रुकावट है। यही वजह है कि उसको कुचलने और ख़ामोश कर देने के लिए तमाम हुकूमतें मुत्तहिद हैं ख़्वाह वह मुस्लिम ममालिक की हुकूमतें हों या गैर इस्लामी मुल्कों की हुकूमतें, हद तो यह है कि इस तबक़ा को पस्पा करने के लिए उन हुकूमतों ने सिर्फ हथियारों की मदद पर बस नहीं किया, बल्कि अपने रिआया के तमाम मुसलमान अफ़राद को उनकी मुख़ालफ़त करने और उनका ख़ातिमा करने पर आमादा किया।

गोया इस्लाम को मुसलमानों ही के हाथों कमज़ोर करने और उसके तनावर दरख़्त को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए उन्हीं के अफराद को इस्तेमाल किया गया और दीन की मुख़ालफ़त मसनूई इस्लाम से इस्लामी कदरों की मुख़ालफत मसनूई मज़हबी क़द्रों से की जाने लगीं, एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई को एक जमाअत दूसरी जमाअत को एक शख़्स दूसरे बुजुर्ग को नुक़्सान पहुंचाने के लिए इस तरह आमादा हो

गया कि गोया वह कोई बहुत मुक़द्दस और कोई बहुत अज़ीम इस्लामी मुहिम अंजाम दे रहा है, जिससे गफ़्लत बरतने पर आख़िरत में उसको जवाबदेह होना होगा।

यह है वह तल्ख़ हक़ीक़त जो मुसलमानों के मुआशरा में हर जगह मौजूद और महसूस है, कहीं बड़े पैमाने पर, कहीं हुकूमतों की सर परस्ती में और कहीं जमातों की सरपरस्ती में, कहीं जाती बुग्ज़ व इनाद के जज़्बात काम कर रहे हैं तो कहीं जाह व मंसब की हिर्स व हवस अपनी कमंदें फैला रही हैं।

इस अफ़सोस नाक हक़ीक़त से भी इंकार की कोई गुंजाइश नहीं कि इस्लाम दुश्मन ताक़तों और उसके मुख़ालिफ़ीन को इस तर्ज़े अमल से बहुत शह मिली, उन्होने ख़्वाह इस मौक़ा को गनीमत समझा हो या कोशिश करके यह मौक़ा पैदा किया हो, जो सूरते हाल भी हो बहर हाल वह मुसलमानों को कमज़ोर और मगलूब, ज़लील व ख़्वार, कमज़ोर नातवां और शिकस्त खूरदा बनाने के लिए बहुत काफी थी, चुनांचे इस का रद्दे अमल यह हुआ और बराबर होता जा रहा है कि मुसलमानों की यह अज़ीम और गालिब उम्मत सिर्फ कमज़ोर और मग़लूब ही नहीं है, बल्कि एहसासे ज़िल्लत व रुसवाई के ऐसे बोझ के नीचे दबी हुई है जिसने उसको हर बुलन्दी पेश क़दमी से महरूम कर रखा है और जिससे बजाहिर (जब तक यह सूरते हाल और तर्ज़े अमल काइम रहे) निजात की कोई उम्मीद भी नहीं।

इस घर को आग लग
गई घर के चराग से

मैं नहीं समझता कि उम्मते इस्लामिया की मौजूदा मगलूबियत व मज़लूमियत किसी और तर्ज़े अमल का नतीज़ा है, बल्कि इसी तर्ज़े अमल ने उसको अंजाम तक पहुंचा दिया कि दस करोड़ मुसलमानों की 22 बड़ी–बड़ी हुकूमतों ने मिल कर भी तन्हा एक मामूली तादाद रखने वाली ज़लील क़ौम यहूद को जो उन के मुल्क में दखील और आक्रामक क़ौम थी जो चारों ओर से उन्हीं हुकूमतों से घिरी हुई थी, सिर्फ उसको भी यह सारी हुकूमतें एक आवाज़ और एक जिस्म हो कर पराजय न कर सकीं, बल्कि शिकस्त खा कर और जान माल और रक़्बा यहाँ तक कि मस्जिदे अक्सा जैसी मुकद्दस यादगारों तक का अज़ीम तर खसारा बर्दाश्त कर के वापस आ गईं।

इस तर्ज़े अमल का अंजाम है कि मुसलमान अपनी मज़हबी तालीमात व शआइर, और उसकी रूह से बिल्कुल कट चुका है, और उसने वह किरदार अदा करना शुरु कर दिया है जो वक़्त की सबसे ज़लील व कमज़ोर और पस्त हिम्मत कौम अदा करती है, और जो कौम क़यादत व इमामत का ख़ुदादाद मंसब ले कर आई थी वही आज अपने ज़माने की अनुयायी और मुक़ल्लिद हैं, इक़्बाल ने पहले ही कहा था–

कर सकते थे जो अपने ज़माने की इमामत
वह कोहना दिमाग अपने ज़माने के हैं पैरो।

◆◇◆

हालात के बिगाड़ का बड़ा सबब

—मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

''ज़बान'' अल्लाह की एक बड़ी नेअ़मत है, लेकिन सब से ज़ियादा इसी नेमत की नाक़द्री की जाती है, और उसका बेजा इस्तेमाल किया जाता है, इस वक़्त समाज के बिगाड़ का शायद सब से बड़ा बसस ज़बान की असावधानियां हैं, बहुत कम लोग होंगे जो शब्दों को तौल—तौल कर बोलते हैं, और जिनका अमल अल्लाह के रसूल के इस कथन पर हैः—

अनुवादः— जो खामोश रहा वह बच रहा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ 2689)

आदमी जब बोलने पर आता है तो भूल जाता है कि वह ज़बान से क्या क्या निकाल रहा है और उसके क्या परिणाम सामने आने वाले हैं, एक लम्बी हदीस में आप सल्ल0 ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ि0 के सवाल के जवाब में इस्लाम के हुम्कमों की वज़ाहत (व्याख्या) की, फिर फरमायाः— अनुवादः— ''क्या मैं तुम्हें इन तमाम चीज़ों की बुन्याद न बताऊँ, मैंने कहा, ज़रूर इरशाद फरमाइये, आप सल्ल0 ने ''ज़बान'' की ओर इशारा करते हुए फरमाया ''इसको काबू में रखो,'', मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! जो हम बात चीत करते हैं उस पर भी हमारी पकड़ होगी, आप सल्ल0 ने फरमायाः— ऐ मुआ़ज़! अल्लाह तुम्हारा भला करे, लोगों को मुँह के बल आग में उनकी ज़बान की बक—बक ही तो ले जायेगी''।

ज़बान का इस्तेमाल आदमी जब बिना सोचे समझे बिना हिच किचाहट के करता है तो ऐसी ऐसी बातें ज़बान से कहता है कि जो उसको जहन्नम के रास्ते पर डाल देती हैं, और कभी—कभी उसको एहसास भी नहीं होता, वह अपनी ज़बान से न जाने कितने दिलों पर आरे चलाता है, कितने खानदानों में दूरियाँ पैदा करता है, मर्द—औरत में अलगाव पैदा करता है, नफ़रतों के बीज बोता है, बदगुमानी पैदा करता है और पूरे समाज को तबाह करके रख देता है एक अरबी शायर कहता हैः—

अनुवादः— (बर्छे के ज़ख़्म भरे जा सकते हैं, लेकिन ज़बान जो ज़ख़्म लगाती है उसका कोई इलाज नहीं)।

हालात के बिगाड़ का बड़ा सबब यही ज़बान है, अगर यह काबू में आ जाये तो हालात संवर जाते हैं, ज़ाहिर है मुँह में ज़बान ऐसी चीज़ है जो आदमी को तबाही की खाई में गिराती है, एक तरफ़ तो ज़बान का चटखारा उसको हलाल ह़राम के फ़र्क से रोक देता है, और एक इन्सान थोड़े से मज़े के लिए सब कुछ कर गुज़रता है, और इस से बढ़ कर उसका ग़लत इस्तेमाल है, और ज़बान की बेएहतियातियाँ हैं कभी—कभी एक छोटा सा जुम्ला आदमी को पाताल में पहुँचा देता है।

❖❖❖

आह! बड़े भाई फ़ज़लुलबारी मरहूम

—गुफ़रान नदवी

मरहूम एक नामवर आलिमे दीन मौलाना अब्दुलबारी नदवी रह0 के बड़े बेटे थे, कई महीने से बीमार चल रहे थे, लेकिन अपनी ख़ुश मिज़ाजी और ज़िन्दादिली की वजह से अपनी बीमारी का एहसास नहीं होने देते थे, अल्लाह तआला ने उन्हें रमज़ान शरीफ के पहले अशरे में अपने पास बुला लिया, रमज़ान का पूरा महीना बाबरकत होता है, पहला अशरा रहमत के लिए ख़ास है, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि उसने मरहूम को अपनी रहमत की छाया में ढांक लिया होगा। मरहूम ने अपने को मिल्ली व दीनी कामों के लिए वक़्फ़ कर दिया था, नदवतुल उलमा से मरहूम का ख़ुसूसी तअल्लुक़ था, कैसा मुशकिल काम हो उसके लिए जानतोड़ कोशिश करते, और कामयाब हो जाते, जिसके नतीजे में नदवे के ज़िम्मेदारों और बुजुर्गों की उन्हें दुआएं मिलतीं, इदारे की ख़िदमत के अलावा उनका कोई जज़बा न होता, जब तक सेहत ने साथ दिया नदवे में बराबर हाज़िर होते, नाएब नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना हमज़ा हसनी नदवी की ख़िदमत में आते और सभी छोटे बड़ों से मुलाक़ात करते, नदवे की तरक़्क़ी और फ़लाह के लिए फ़िक्रमन्द रहते, और यह सोचते कि हमारे लायक़ क्या काम है जिसको हम अन्जाम दें, उनकी ख़िदमत तखनऊ शहर की क़दीम और मशहूर अनजुमन इस्लाहुल मुस्लिमीन से वाबस्ता थी उनके कारनामें में अनजुमन से वाबस्ता मुमताज़ कालेज के लिए एक बड़ी ज़मीन पर कबज़ा, यह ज़मीन अनजुमन की मिलकियत थी, लेकिन बहुत से लोगों ने नाजायज़ कबज़ा कर रखा था, मरहूम फ़जलुलबारी साहब ने बड़ी कोशिशों और हिकमते अमली से इस ज़मीन को हासिल किया, आज उसी ज़मीन पर मुमताज़ कालेज की ख़ूबसूरत और वसीअ़ कुशादा इमारत खड़ी है, जहाँ हज़ारों बच्चे तालीम हासिल करते हैं। यह सब उनके सद्क़ात जारियात हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''तुम में सबसे अच्छा आदमी वह है जो दूसरों को नफ़ा पहुंचाये'' मौत ऐसी सच्चाई है जिसकी हक़ीक़त से कोई इन्कार नहीं कर सकता, समझदार और बुद्धिमान इन्सान वही है जो अपनी ज़िन्दगी से पूरा फ़ायदा उठाये, समय और पैसा अल्लाह की दी हुई नेअ़मत है उसका उचित उपयोग किया जाये, अल्लाह के यहाँ इसके बारे में पूछा जायेगा, मौलाना अब्दुल बारी नदवी रह0 के चार बेटे थे, सबसे बड़े यही फ़जलुल बारी, उसके बाद शमसुलबारी, अहमदुलबारी, उबैदुलवारी, माशाअल्लाह सब दीनी जज़बे

शेष पृष्ठ....33....पर..

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: एक शख्स ने अपने मकान का एक हिस्सा अपने एक बेटे को दे दिया और मालिकाना हैसियत दे कर बेटे के कब्ज़ा में दे दिया और बेटा एक मुद्दत से अपनी बीवी और बच्चों के साथ मकान में रह रहा है, बाप को किसी बात पर नाराज़गी हुई तो वह मकान ख़ाली कराने पर बज़िद हैं और मकान वापस लेना चाहते हैं, क्या इस्लामी शरीअ़त में उन्हें मकान वापस लेने का हक़ हासिल है? उस मकान पर अभी मिलकियत शर्अन किस की है? बाप की या बेटे की?

उत्तर: वालिद ने जब मकान का कोई हिस्सा बेटे को हिबा कर दिया और अपनी मिल्क व क़ब्जा से ख़ारिज कर के बेटे की मिल्क में कब्ज़ा में दे दिया तो यह हिबा मुकम्मल और नाफिज़ हो गया, अब वालिद को वापस लेने का हक़ नहीं है, अलबत्ता बेटे पर वाजिब है कि अपने बाप की नाराज़गी को दूर करे और मुआ़फ़ी तलाफी करके अपना मुआ़मला दुरुस्त करे, फुक़्हा ने लिखा है कि जू रहम महरम (सगे सम्बन्धियों) को हिबा करने के बाद लौटाने का हक़ नहीं है।

(फतावा हिन्दिया 4/387)

प्रश्न: एक शख्स के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया, उसके बाद उस शख़्स ने अपना हिस्सा जो बेटे के तर्का से उसको मिलना चाहिए था, अपने मरहूम बेटे के बच्चों को ज़बानी हिबा कर दिया और अपने अज़ीज़ों के सामने उसका इज़हार भी कर दिया, चुनांचे उन बच्चों ने उसको अपने क़ब्जा व तसर्रुफ़ में रखा, अर्सा गुज़रने के बाद शख़्स मज़कूर का मुतालबा हो रहा है कि मेरा हक़ मुझ को वापस करो, सवाल यह है कि शख़्स मज़कूर को अपने पोते व पोती के हक़ में अपना हिस्सा हिबा कर देने और हिस्सा तक़सीम हो कर उन के क़ब्ज़ा में पहुंच जाने के बाद दोबारा मांगने का हक़ है?

उत्तर: पोता पोती को अपना हिस्सा हिबा कर देने और उनका हिस्सा पर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद शख़्स मज़कूर को दोबारा मांगने व लौटाने का हक़ शर्अन नहीं है।

(दुर्रे मुखतार 4/518)

प्रश्न: एक शख़्स ने अपना मकान जो रिहाइशी था, अपने भतीजे के नाम हिबा कर दिया और उम्मीद यह थी कि बुढ़ापे में ख़िदमत करेंगे, उन्हें औलाद नरीना नहीं थी बल्कि सिर्फ दो बेटियाँ थीं जिनकी शादी कर दी थी, अब बुढ़ापे में कोई ख़िदमतगार नहीं, बेटियाँ भी मकान भतीजे के नाम हिबा करने की वजह से ख़फा रहती हैं, अब इरादा यह हो रहा है कि इस हिबा

नामा को तोड़ दें और मकान यथास्थित रहने दें ताकि बाद वफात जो वारिसीन होंगे वह ले लें, क्या ऐसा करना इस्लामी शरीअ़त के हिसाब से दुरुस्त है?

उत्तरः शख़्स मज़कूर ने अगर सिर्फ तहरीर लिखी थी या हिबा नामा बनवाया था और मकान पर भतीजे को क़ब्ज़ा नहीं दिया था तो अभी हिबा मुकम्मल नहीं हुआ, उसके ख़त्म करने का इख़्तियार शर्अन हासिल है, लड़कियों को महरूम करना बुरा है और गुनाह भी, इसलिए मकान को तमाम वारिसीन के लिए छोड़ देना बेहतर है।

(अल बहरुर्राइकः 7/294)

प्रश्नः एक शख़्स के चार लड़के हैं, उनमें एक लड़के का इन्तिक़ाल हो गया, उन्होंने अपनी सारी ज़मीन तीन बेटों और मरहूम बेटे की बेवा के दर्मियान बराबर तक़्सीम कर दी और ज़िन्दगी में सब को काबिज़ बना दिया, मरहूम बेटे की बेवा ने अर्सा से उस ज़मीन से फाइदा हासिल किया, अब शख़्स मज़कूर की वफात के बाद उनके तीनों लड़कों का कहना है कि तमाम ज़मीनें हमारी हैं, बेवा का उसमें हिस्सा नहीं है, उसके वारिस सिर्फ हम तीन भाई हैं, सवाल यह है कि क्या मरहूम बेटे की बेवा का कोई हिस्सा नहीं बनता, क्या उन्हें ज़मीन वापस करनी पड़ेगी?

उत्तरः जो ज़मीन शख़्स मज़कूर ने अपने तीनों बेटों और मरहूम बेटे की बेवा को हिबा करके तक़्सीम कर दी और अपना क़ब्ज़ा हटा कर उनका कब्ज़ा करा दिया तो वह सब की हस्ब तक़्सीम मिल्क होगी, वह तर्का नहीं है और बेवा को जो कुछ दिया गया है उससे वापस लेने का हक़ शख़्स मज़कूर के वारिसीन को नहीं है और बेवा को मिली हुई ज़मीन पर बदस्तूर मालकाना हक़ रहेगा।

(फतावा हिन्दियाः 4/374)

प्रश्नः अगर कोई शख़्स कुछ बतौर हदया दे तो उससे यह पूछना की यह चीज़ हलाल है या हराम, शर्अन कैसा है?

उत्तरः हद्या अगर ऐसे शख़्स की तरफ़ से है जो हलाल कमाई का एहतिमाम रखता है तो बिला वजह हद्या की हुई चीज़ के बारे में तहक़ीक़ करना सही नहीं है, क्योंकि इससे बसा औक़ात हद्या करने वाले को तकलीफ़ हो सकती है, जिससे बचना ज़रूरी है, हाँ! अगर दी हुई चीज़ के हलाल होने में शुब्हा हो तो तहक़ीक़ कर लेने में कोई हरज नहीं है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान भाई के यहां जाये तो वह उनके पेश किए हुए खाने में से खा ले और उसके बारे में सवाल न करे, पीने की चीज़ हो तो पी ले और सवाल न करे, इस हदीस की शरह करते हुए मुल्ला अली क़ारी रह0 ने लिखा है कि सवाल से कभी कभी तकलीफ़ पहुँचती है और यह उस सूरत में है जब्कि उसकी बे दीनी का इल्म न हो।

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

निकाह में औरत का अधिकारः–

निकाह के बारे में शरीयत ने औरत को न तो इतना अख्तियार दिया है कि वह बिलकुल बिना नकेल के जैसे बन कर अभिभावकों के विवेक और उनकी मर्जी के खिलाफ सिर्फ अपनी पसंद से शादी रचा बैठे ऐसी शादी को हदीस में धमकी के रूप में बलात्कार का नाम दिया गया है।

(इब्ने माजह पृष्ठ 136)

क्यों कि ऐसी निरंकुश शादियां आम तौर पर गन्दी भावनाओं के दबाव में आने वाली हैवानों वाली इच्छाओं के आगे हथियार डाल देने और शर्म व हया को पैरों तले रौंद देने वाली लड़कियां ही करती और कर सकती हैं जिस का अंजाम आम तौर पर नाकामी और पछतावा के शकल में सामने आता है बाद में खुद उन्हें भी एहसास हो जाता है और अपने कर्म की बुराई बल्कि तबाहकारी का यकीन आ जाता है। इसके उल्टा अभिभावकों की पसंद और उनके विचार विमर्श के बाद उनकी पसंद से होने वाली शादी ही वास्तव में ''खाना आबादी'' का जरिया और भविष्य सँवारने का कारण बनती है। इन्हीं कारणों की बिना पर हदीसों में अभिभावक की मर्जी के बगैर निकाह करने से सख़्ती से औरतों को रोका गया है रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमायाः— ''बिना वली (अभिभावक की इजाजत) के निकाह, मानो होता ही नहीं'' इस बारे में तो आलिमों का कोई इख्तिलाफ ही नहीं कि वली की इजाज़त के बिना निकाह करना सख़्त नापसंद है बल्कि अक्सर इमामों के नज़दीक ऐसा निकाह होता ही नहीं। हनफी मसलक के इमामों में से इमाम मुहम्मद (रह०) की यही बात लिखी गयी है।

इसी के साथ औरत की रजामंदी और उसकी इजाजत भी इतनी ज़रूरी करार दी गयी है कि अगर वह बालिग है तो उसकी इजाजत लिए बिना निकाह सही नहीं होगा। इजाजत लिए बिना किसी भी बालिग़ औरत का निकाह ना किया जाये चाहे उसकी पहली शादी हो या दूसरी।

(मिश्कात जिल्द—2 पृष्ठः 270)

शरीयत ने जिस तरह और प्राकृतिक भावनाओं का लेहाज किया है इसी तरह हया के जज्बे की भी, और क्यों कि पहली शादी के वक़्त लड़की में हया ज़ियादा होती है इस बिना पर निकाह के लिए खुली इजाजत जरूरी नहीं करार दी गयी बल्कि उसका खामोश रहना ही इजाजत के बराबर करार दिया गया नबी अकरम (स०) से यह दुश्वारी बताने और मसला पूछ कर बयान करने वाली एक सम्मानित महिला (आप सल्ल० की बीवी) ही हैं जो इस गम्भीरता को सबसे ज़ियादा समझ सकती थीं। हजरत आइशा (रजि०) ने हुजूर (स०) से कहा कि कुंवारी

लड़की तो (इजाजत देते हुए) शर्मायेगी आप सल्ल0 ने जवाब दिया कि उसकी खामोशी ही उसकी सहमति है।

(बुखारी जिल्द–2 पृष्ठ 771)

बालिग औरत की इजाजत और उसकी सहमति इस कद्र महत्वपूर्ण और लेहाज करने के लायक है कि उसके बिना अभिभावक का किया हुआ निकाह नहीं माना गया बुखारी शरीफ ही में यह वाकिया भी मिलता है कि एक महिला, खन्सा बिन्त खुजाम का निकाह उनके पिता ने उनकी इजाज़त लिए बिना कर दिया उन्हें यह नागवार हुआ और रसूलुल्लाह (स०) से आकर शिकायत की तो वह निकाह आप सल्ल0 ने प्रतिबंधित करार दे दिया।

''हजरत खन्सा बिन्त खुजाम अंसारिया का निकाह उनके पिता ने बिना उनकी सहमति के कर दिया जबकि वह कुंवारी ना थीं उन्हें नागवार हुआ और रसूलुल्लाह सल्ल0 से आ कर (शिकायत की) आप सल्ल0 ने उनका निकाह स्थगित कर दिया।''

(बुख़ारी जिल्द–2 पृष्ठः 772)

बल्कि एक हदीस शरीफ से तो मालूम होता है कि एक कुंवारी (बालिग) लड़की का निकाह उसके पिता ने लड़की की मर्जी के बिना कर दिया था तो जब उस लड़की ने आप सल्ल0 से शिकायत की तो अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया'' चाहे तो निकाह बाकी रखे चाहे तो ख़त्म कर दे''।

(अबू दाऊद जिल्द–1 पृष्ठः 286)

इसलिए फिक़्ह हनफी में हर बालिग लड़की को अधिकार हासिल है कि जिस से चाहे निकाह करे अभिभावकों की इजाजत के बिना भी लेकिन कुछ हालतों में अभिभावकों को आपत्ति को हक दिया या है हाँ अभिभावकों की इजाज़त और सरपरस्ती में होने वाले निकाह को पसंद किया गया है)। और इस बात की पुष्टि एक और हदीस ''बिन पति वाली औरत अपने अभिभावक से ज़ियादा अपने आपके बारे में अधिकार रखती है'' (बुखारी व मुस्लिम) से भी होती है सुनन नसई'' में भी इस तरह की एक हदीस है।

(जिल्द– 2 पृष्ठः 63)

इस तफ्सील से यह हक़ीक़त भी सामने आयी कि शरीयत ने इस मसले में भी बहुत ही संतुलित रस्ते को अपनाया है ना औरत को नज़र अंदाज किया न अभिभावकों को महत्वहीन ठहराया और ना औरत का अधिकार छीना, ना अभिभावकों को मजबूर किया बल्कि बीच का रास्ता अपनाया।

निकाह के वक़्त क्या उम्र होनी चाहिएः–

शरीयत की तरफ़ से लड़की या लड़के के लिए शादी की ऐसी कोई उम्र निर्धारित नहीं की गयी कि उससे पहले या बाद निकाह सही ही ना हो हाँ मुनासिब यह है कि दोनों की बालिग होने के बाद शादी की जाए क्यों कि इस सूरत में उंन्हें अपने अख़्तियार और पसंद से शादी का हक दिया गया है।

कम उमरी की शादी!:–

मगर कभी कभी मस्लेहत इसी में होती है कि बालिग होने से पहले ही शादी कर दी जाये वरना यह खतरा पेश आ सकता है कि बाद में

ऐसा मुनासिब रिश्ता ना मिले या माँ–बाप यह महसूस करने लगें कि हमारी जिन्दगी अब बहुत कम बची है बच्चों के बालिग़ होने तक ख़त्म हो जायेगी और हमारे बाद बच्चों की शादी की समस्या कठिन या नामुमकिन हो जायेगी या उन्हें कोई मुनासिब रिश्ता न मिल पायेगा यह और इनके अलावा बहुत सी ऐसी मस्लेहतें ऐसी थीं कि जिनकी वजह से कम उमरी की शादी की इजाज़त देना ही मुनासिब था अतः मुकम्मल दीन शरीयत में गुंजाइश दी गयी कि ना बालिग़ बच्चों के बाप दादा (और उनकी अनुपस्थिति में अन्य अभिभावक) उनका निकाह कर सकते हैं। यद्यपि कुरआन मजीद की सूरह तलाक आयत न० 4 से भी नाबालिग़ के निकाह के सही होने का पता चलता है लेकिन इसकी दूसरी सबसे मजबूत दलील और अखण्डनीय सबूत हज़रत आइशा का (लगभग 6 साल की उम्र में) आप (सल्ल0) से निकाह है।

उम्मुल मूमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि०) के इस कम उमरी की शादी का जिक्र इतनी ज़ियादा हदीसों में मिलता है कि उन हदीसों को हदीस के माहिरों की भाषा में ''मुतवातिर'' कहा जा सकता है। इसके अलावा हज़राते सहाबा के संज्ञान में और उनकी मौजूदगी में हज़रत कुदामा बिन मजऊन (रज़ि0) ने हज़रत इब्ने जुबैर की बेटी से (उनकी पैदाइश ही के दिन) निकाह कर लिया था (फत्हुल कदीर जिल्द–2 पृष्ठ 50) और इस पर किसी भी सहाबी ने आपत्ति नहीं की इससे यह भी मालूम हुआ कि हजरत आइशा से कम उम्री में निकाह आप (सल्ल0) की विशेषता नहीं थी बल्कि शरीयत का आम क़ानून है। इन दलीलों की बिना पर उम्मत के तमाम उलमा का नाबालिग़ के निकाह के सही होने पर सर्वसम्मति है।

पूरी उम्मत में सिर्फ दो नाम इब्ने शिबरिमा और यजीद इब्ने असम्म इसके ख़िलाफ़ मिलते हैं।

(फत्हुल कदीर जिल्द 2 पृष्ठ 50)

बहरहाल शरीयत ने बाप–दादा को यह अधिकार दिया है कि वह अपनी नाबालिग़ औलाद चाहे लड़का हो या लड़की, निकाह कर सकते हैं बल्कि हनफी फिक़्ह के माहिर हजरात ने तो बाप–दादा की अनुपस्थिति में दूसरे अभिभावकों जैसे चाचा, ताया वगैरह को भी इसका अधिकार दिया है मगर चाचा ताया वगैरह के किये हुए निकाह को बालिग होने के बाद तुरंत काजी के जरिये ''फस्ख'' करने (तोड़ने) का अधिकार खियारे बुलूग के बिना पर कुछ शर्तों के साथ हासिल होगा।

हाँ बाप–दादा का किया हुआ निकाह बालिग़ होने के बाद भी आम हालात में फस्ख नहीं किया जा सकता। हाँ अगर बाप दादा का फासिक या बद मिजाज और ला परवाह या अशुभ चिंतक होना सिद्ध और मशहूर हो तो उनका किया हुआ निकाह सही ना होगा और अगर ऐसा कर दिया गया तो काजी के यहाँ मुकद्दमा करके फस्ख कराया जा सकता है।

(रद्दुल मुहतार जिल्द 2 पृष्ठ304–305)

❖❖❖

रब की बड़ाई

—मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह0

कुर्आन मजीद ने इनसान के दिल में केवल तौहीद का अक़ीदा मज़बूत करने और शिर्क से नफ़रत, घृणा पैदा करने को काफ़ी नहीं समझा बल्कि उसने अल्लाह की अज़मत, बड़ाई, शक्ति की वह विशेषतायें जगह जगह बयान कीं हैं, जिसके बाद इनसान के दिल में खुद ब खुद यह भावना उभरने लगती है कि ऐसी कुदरत वाले मालिक व स्वामी को छोड़ कर कहीं और न जाये और उसका सम्बन्ध अपने पैदा करने वाले से केवल नियमानुसार क़ानूनी न रहे बल्कि भावुकता के साथ हो, यह ईमान उसके रगों में पेवस्त हो चुका हो, इस विषय में कुर्आन मजीद में जगह जगह अल्लाह तआला की अच्छी अच्छी विशेषतायें और अच्छे अच्छे नामों का ज़िक्र मिलता है, लेकिन ''आयेतल कुर्सी'' में एक विशेष निराले और उत्तम ढंग में इसका बयान है, इसलिए हम इसी को यहां अंकित कर रहे हैं ''वही अल्लाह है उसके अलावा कोई इबादत के योग्य नहीं, वही जीता है और सब उसके सहारे जीते हैं, न उसको ऊँघ आती है औ न नींद, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है, कौन है जो बिना उसकी इजाज़त के उसके पास सिफ़ारिश कर सके, उनका अगला पिछला सब जानता है, उसके इल्म के किसी भाग पर भी वह हावी नहीं हो सकते, मगर जितना वह चाहे,, उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर व्याप्त है और उन दोनों की निगरानी उसको थकाती नहीं, और वही बुलन्द व श्रेष्ठ, बड़ा महान है।

जिस ख़ुदा को इनसान ने एक ख़ुदा स्वीकार किया, अपना रब, मालिक, हाकिम और स्वामी माना, उसकी कुदरत और बड़ाई का हाल जिस तरह बयान किया गया है शायद किसी और जगह इस तरह नहीं बयान किया गया। कहा यह जा रहा है कि इन झूठे मअ़बूदों के सामने चाहे वह चाँद सूरज की शकल में हों या देवी देवताओं की, या पत्थरों, पहाड़ों, दरख़्तों और समन्द्रों की, अल्लाह की उस महानता को सोचो जिसको तुम अपनी आँखों से अपने अन्दर और संसार में देखते रहते हो, इस बात को कुर्आन में इस तरह कहा गया है:—

''आगे हम उनको दुन्या में और ख़ुद उनके अन्दर अपनी निशानियाँ दिखा देंगे, यहां तक कि यह बात उनके सामने खुल कर आजायेगी कि निश्चित रूप से यही सच है''।

मनुष्य के स्वभाव का तक़ाजा है किसी उच्चतम हसती के सामने अपनी

बन्दगी को ज़ाहिर करे और पूर्ण रूप से अपने को उसके हवाले करे, वह हस्ती केवल अल्लाह की है, इस भावना की पूरी तसकीन का सामान ''आयेतल कुर्सी'' में मौजूद है, इसमें यह बताया गया है कि सारे खुदाओं और सारी ख़ुदाई को छोड़ कर तुमने जिस पाक और बेऐब, बलन्द व बालातर ख़ुदा–ए–कुद्दूस का सहारा लिया है, उसकी बड़ाई उसकी सलतनत व इक़्तिदार साम्राज्य सत्ता, कूवत व ताक़त के सामने सारे आसमान व ज़मीन में कोई चीज़ नहीं, इस भूमण्डल की दूसरी मामूली चीज़ों का क्या ज़िक्र है, इन विशेषताओं को देख कर और सुन कर एक इनसान का दिल अगर वह मर नहीं गया है या मस्ख़ (रूप भ्रष्ट) नहीं हो गया है, ख़ुदा की महब्बत अज़मत से खुद ब खुद लबरेज़ परिपूर्ण होने लगता है।

यह उसके स्वभाव, प्रकृति का तक़ाज़ा भी है, एहसानमन्दी का परिचय भी है, और उसकी शदीद रूहानी और जिस्मानी ज़रूरत भी।

❖❖❖

मौलाना नज़रुल हफ़ीज़ नदवी अज़हरी का इन्तिक़ाल पुरमलाल

इल्मी दीनी हल्कों में मौलाना मरहूम के इन्तिक़ाल की ख़बर बहुत अफ़सोस के साथ सुनी गई, 28 मई, 2021 जुमे के दिन मौलाना नमाज़ की तैयारी में थे, कि अचानक तबीअत बिगड़ गई, साँस लेने में दुशवारी हो रही थी, मौलाना ख़ुद गाड़ी पर बैठ कर डॉक्टर के यहाँ गये, डॉक्टर साहब देख रहे थे, मौलाना की ज़बान पर ज़िक्र इलाही ज़ारी था कि रूह परवाज़ कर गई, और मौलाना अपने मालिके हक़ीक़ी के पास पहुँच गये, गोया मुसाफ़िर था, रस्ते में नींद आ गई। अल्लाह तआला मौलाना की मग़फ़िरत फरमाये और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मुक़ाम अता फ़रमाए। मौलाना एक अच्छे मुअल्लिम और एक अच्छे मुरब्बी थे, इसके अलावा बहुत सी किताबों के लेखक थे ''मग़रिबी मीडिया'' उनकी बहुत प्रसिद्ध किताब है जिसका अनुवाद कई भाषाओं में हुआ। मौलाना की योग्यता के पेशे नज़रऔर अरबी भाषा के बड़े स्कालर के रूप में भारत सरकार ने मौलाना नज़रुल हफ़ीज़ नदवी अज़हरी रह0 को राष्ट्र पति एवार्ड प्रदान किया। इस्लामी दुन्या के बड़े विद्वान और लेखक मौलाना अली मियाँ नदवी की पुस्तकों में उनकी विशेष रुचि थी। उन पुस्तकों के बड़े ज्ञाता थे।

कुर्बानी के कुछ अहम मसाइल

—इदारा

कुर्बानी का बड़ा सवाब है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी से ज़ियादा कोई चीज़ अल्लाह तआला को पसन्द नहीं इन दिनों में ये नेक काम सब नेकियों से बढ़ कर है और कुर्बानी करते वक़्त यानि ज़ब्ह करते वक्त खून का जो क़तरा ज़मीन पर गिरता है तो ज़मीन तक पहुंचने से पहले ही अल्लाह तआला के पास मक़बूल हो जाता है तो ख़ूब ख़ुशी से और ख़ूब दिल खोल कर कुर्बानी किया करो और हमारे नबी ने फरमाया कि कुर्बानी के जानवर के बदन पर जितने बाल होते हैं हर बाल के बदले में एक एक नेकी लिखी जाती है, सुब्हान अल्लाह भला सोचो कि इससे बढ़ कर और क्या सवाब होगा कि एक कुर्बानी करने से हज़ारों लाखों नेकियाँ मिल जाती हैं भेड़ के बदन पर जितने बाल होते हैं अगर कोई सुब्ह से शाम तक गिने तब भी न गिन पाये, पस सोचो तो कितनी नेकियाँ हुईं, बड़ी दीनदारी की बात है कि अगर किसी पर कुर्बानी वाजिब नहीं है तब भी इतने सवाब की लालच में कुर्बानी करा देनी चाहिए कि जब ये दिन चले जायेंगे तो ये दौलत कहां नसीब होगी और इतनी आसानी से इतनी नेकियाँ कैसे कमा सकेंगे और अगर अल्लाह ने मालदार और अमीर बनाया तो मुनासिब है कि जहां अपनी तरफ से कुर्बानी करे जो रिश्तेदार मर गये हैं माँ—बाप वगैरह उनकी तरफ़ से भी कुर्बानी कर दे कि उनकी रूह को इतना बड़ा सवाब पहुंच जाये, हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से आपकी बीवियों की तरफ़ से अपने पीर वग़ैरह की तरफ़ से करदे और नहीं तो कम से कम इतना तो ज़रूर करे की अपनी तरफ़ से कुर्बानी करे क्योंकि मालदार पर तो वाजिब है और अगर नहीं की तो उससे बड़ा बद नसीब और महरूम कौन होगा और गुनाहगार सो अलग।

1. जिस पर ज़कात वाजिब हो उस पर बक़रईद के दिनों में कुर्बानी करना भी वाजिब है और अगर इतना माल न हो जितने के होने से ज़कात वाजिब होती है तो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं है लेकिन फिर भी अगर कर दे तो बहुत सवाब पाये।

2. मुसाफ़िर पर कुर्बानी वाजिब नहीं।

3. बक़रईद की दस्वीं तारीख़ से ले कर बारहवीं तारीख की शाम तक कुर्बानी करने का वक़्त है चाहे जिस दिन कुर्बानी करे लेकिन कुर्बानी करने का सबसे बेहतरीन दिन बक़रईद का दिन है फिर ग्यारहवीं फिर बारहवीं तारीख—

4. बक़रईद की नमाज़. होने से पहले कुर्बानी करना दुरुस्त नहीं है जब लोग नमाज़ पढ़ चुकें तब करे अलबत्ता अगर कोई किसी देहात में और गाँव में रहता

है तो वहां तुलूअ़ सुब्ह सादिक़ के बाद भी कुर्बानी करना दुरुस्त है शहर के और क़स्बे के रहने वाले नमाज़ के बाद करें।

5. अगर कोई शहर का रहने वाला अपना जानवर गाँव भेज दे तो उसकी कुर्बानी बक़रईद की नमाज़ से पहले भी दुरुस्त है। अगरचि खुद वह शहर ही में हो लेकिन जब कुर्बानी देहात में भेज दी गयी तो नमाज़ से पहले कुर्बानी करना दुरुस्त हो गया, ज़ब्ह हो जाने के बाद उसको मंगवा ले और खा ले।

6. बारहवीं तारीख़ सूरज डूबने से पहले–पहले कुर्बानी करना दुरुस्त है जब सूरज डूब गया तो अब कुर्बानी करना दुरुस्त नहीं।

7. दसवीं से बारहवीं तक जब जी चाहे कुर्बानी करे चाहे दिन में चाहे रात में लेकिन रात को ज़ब्ह करना बेहतर नहीं कि शायद कोई रग न कटे और कुर्बानी दुरुस्त न हो।

8. दसवीं ग्यारहवीं तारीख़ सफ़र में थी फिर बारहवीं तारीख़ सूरज डूबने से पहले घर पहुंच गये या पन्द्रह दिन कहीं ठहरने की नीयत कर ली तो अब कुर्बानी करना वाजिब है। इसी तरह अगर पहले इतना माल न था इसलिए कुर्बानी वाजिब न थी फिर बारहवीं तारीख़ सूरज डूबने से पहले कहीं से माल मिल गया तो कुर्बानी करना वाजिब है।

9. अपनी कुर्बानी को अपने हाथ से ज़ब्ह करना बेहतर है अगर खुद ज़ब्ह करना न जानता हो तो किसी और से ज़ब्ह करवा ले ज़ब्ह होते वक़्त वहां जानवर के सामने खड़े हो जाना बेहतर है और अगर ऐसी जगह है कि पर्दे की वजह से सामने नहीं खड़ा हो सकता तो भी कोई हरज नहीं है।

10. कुर्बानी करते वक़्त ज़ुबान से नीयत पढ़ना और दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं है अगर दिल में ख़ियाल कर लिया कि मैं कुर्बानी करता हूँ और ज़ुबान से कुछ नहीं पढ़ा सिर्फ बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर दे तो भी कुर्बानी दुरुस्त हो गयी, लेकिन अगर याद हो तो दुआ पढ़ लेना बेहतर है।

❖❖❖

आह! बड़े भाई .....

से भरपूर थे, मौलाना अब्दुलबारी नदवी के एक ही दामाद थे मौलाना अय्यूब नदवी, जो गोहाटी (आसाम) के किसी कालेज में अरबी के उस्ताज़ थे, इन सब पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों, अल्लाह तआला इन सब की औलादों को अपने दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल फ़रमाये। ◆◇◆

मनोरंजन के संसाधनों .....

के निर्वाहन में अवरोधक न हों और इसका भी ध्यान रखा जाए कि वो लाभप्रद भी हों, यही सिद्धांत कला संस्कृति और सूचना प्रसारण पर भी लागू करने होंगे, जिस तरह लिबास, खाने पीने और सामूहिक व वयक्तिगत जीवन के लिए सिद्धांत निर्धारित हैं, और इस सिसिले में निम्नलिखित आयत निगाहों के सामने रहे–

""जो लोग मुसलमानों में अश्लीलता फ़ैलाने के इच्छुक रहते हैं उनके लिए दुन्या व आख़िरत में दुःखद अज़ाब है, अल्लाह सब कुछ जानता है और तुम कुछ भी नहीं जानते"। (सूरः नूर 19)

❖❖❖

–हिन्दी लिपि में उर्दू

ईदैन की नमाज़

–इदारा

ईदैन की नमाज़ जुमे की नमाज़ की तरह जमाअ़त से पढ़ी जाती है तन्हा नहीं पढ़ी जा सकती।

जुमे की नमाज़ के लिए अज़ान लाज़मी है जबकि ईदैन की नमाज़ के लिए अज़ान नहीं कही जाती है।

जुमे की नमाज़ के लिए मस्जिद लाज़्मी है जबकि ईदैन की नमाज़ बस्ती से बाहर किसी मैदान में या ईदगाह में पढ़ना मस्नून है, अगर मस्जिद में पढ़ी जाये तो भी जाइज़ है।

जुमे की नमाज़ जुह्र के वक़्त में पढ़ी जाती है जब कि ईदैन की नमाज़ आफ़ताब के तुलूअ़ हो जाने के बाद ज़वाल से बहुत पहले अदा की जाती है।

जुमे की नमाज़ में पहले दो ख़ुत्बे पढ़े जाते हैं फिर दो रक्अत नमाज़ जमाअ़त से पढी जाती है जब कि ईदैन की नमाज़ में पहले दो रक्अ़त नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाती है फिर दो ख़ुत्बे पढ़े जाते हैं।

ईदैन की नमाज़ के लिए जब लोग नमाज़ पढ़ने की जगह इकट्ठा हो जाते हैं तो इमाम या कोई आलिम वग़ैरह लोगों से कुछ इस्लाही बातें करता है और लोगों को नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बताता है, ईदैन की नमाज़ में 6 तक्बीरें ज़ियादा कहीं जाती हैं, तक़रीर करने वाला बताता है कि वह 6 तकबीरें कैसे पढ़ी जाती हैं और बताता है कि नीयत करना तो दिल के इरादे का नाम है ज़बान से कह ले तो बेहतर है, तमाम मुक़्तदी नीयत करें कि इस इमाम के पीछे ईद की नमाज़ पढ़ रहा हूँ।

अब इमाम लोगों को खड़े होने और सफ बनाने का हुक्म देता है, जब लोग सफ बना लेते हैं तब इमाम कहता है नमाज़ की नीयत करो नमाज़ शुरु होने जा रही है, फिर इमाम तकबीरे तहरीमा कहता है और लोग भी तकबीरे तहरीमा कहते हैं लेकिन मुकतदी की तक्बीरे तहरीमा इमाम के बाद होना ज़रूरी है, अब इमाम सना पढ़ता है मुकतदी भी सना पढ़ते हैं जिस मुकतदी को सना याद नहीं है वह ख़ामोश खड़ा रहता है, अब इमाम अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाता है और हाथ छोड़ देता है मुकतदी भी इसी तरह करते हैं अब इमाम दूसरी तकबीर कहता है और हाथ छोड़ देता है, मुक़्तदी भी ऐसा ही करते हैं, अब इमाम तीसरी तक्बीर कहते हुए कानों तक हाथ उठाता है और हाथ बाँध लेता है, मुकतदी भी ऐसा ही करते हैं, अब इमाम सुरह फातिहा बलंद आवाज़ से पढ़ता है, और कोई सूरह मिलाता है, अब अल्लाहु अकबर कह कर रुकू करता है फिर क़ौमा करते हुए दो सजदे अदा करता, फिर दूसरी रकअ़त के लिए खड़ा होता है और सूरह फातिहा बलन्द आवाज़ से पढ़ता है और कोई सूरह या आयतें मिलाता है फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए कानों तक हाथ उठाते

हुए हाथ छोड़ देता है फिर इसी तरह दूसरी तीसरी तकबीर कहते हुए कानों तक हाथ उठाता है और हाथ छोड़ देता फिर रुकू करता है फिर बक़या नमाज़ पूरी करता है, बकिया नमाज़ पूरी करके सलाम फेर देता है।

नमाज़ पूरी हो गयी, याद रहे दोनों रकअ़तों में जो तीन तीन ज़ाइद तकबीरें कही जाती हैं उनमें अगर हाथ उठाने या छोड़ने में ग़लती हो जाये तो नमाज़ खराब नहीं होती अलबत्ता तकबीरों का ज़बान से कहना वाजिब है।

कुछ इमाम नमाज़ के बाद दुआ माँगते हैं फिर दो ख़ुत्बे पढ़ते हैं, लेकिन कुछ इमाम नमाज़ के बाद खुत्बा पढ़ते हैं उसके बाद दुआ माँगते हैं, लोगों को चाहिए कि दोनों खुत्बे इतमीनान से सुनें, खुत्बों और दुआ के बाद एक दूसरे को मुबारकबाद देते हुए अपने अपने घर को आते हैं।

अल्लाह तआला नमाज़ कुबूल फरमाये, आमीन।

❖❖❖

हिज्री कलेण्डर का बारहवां .....

अपने काम में लाई जा सकती है, जैसे झोले बना ले या मुसल्ला बना ले वगैरह। कुर्बानी की खाल क़साब को उजरत में नहीं दी जा सकती कुर्बानी की खाल अगर बिके तो उसकी क़ीमत गरीब मुसलमानों का हक़ है और बेहतर है कि जिस मदरसे में ग़रीब मुसलमान बच्चों को मुफ़्त खाना खिलाया जाता है चाहिए कि कुर्बानी की खाल या उसकी क़ीमत उस मदरसे में दे दें।

अल्लाह की मसलहत इस साल भी कोरोना के सबब कुर्बानी की ईद फीकी रहेगी, अल्लाह की पनाह ढाई करोड़ से ज़ियादा लोग कोरोना की गिरिफ़्त में आ चुके हैं, तीन लाख से ज़ियादा लोग कोरोना के मरज़ में अपनी जानें गवां चुके हैं, मरीज़ों के इलाज पर कितना खर्च हुआ इसका हिसाब कौन लगा सकता है, स्कूल, कॉलेज का अन्दाज़ा कौन कर सकता है, गरीब, मज़दूर, छोटे कारोबारी लोगों ने कितना नुकसान उठाया कौन बता सकता है, मुल्क इक्तिसादी हैसियत से कितना पीछे गया कौन बता सकता है, कोरोना का टीका ईजाद हुआ, वैक्सीन बना ली गयी लेकिन यह जाइज़ा सामने नहीं आया कि जिस पर टीका लगा, वह बिल्कुल महफूज़ हो गया, अल्लाह करे कोरोना के मरीज़ उससे सेहतयाब हों।

हम दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह कोरोना का अज़ाब दुन्या से उठा ले, तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मख़्लूक़ अल्लाह का कुम्बा है, ऐ अल्लाह अपने इस कुम्बे पर, अपने बन्दों पर रहम फरमा और करोना का अजाब उठा ले, साथ ही हम अपने पाठकों से दरख़्वास्त करते हैं कि वह एहतियात के तौर पर मास्क लगायें, मिलने जुलने से भीड़ से परहेज़ करें मुनासिब दूरी बनाये रखें, सफाई सुथराई का खूब ख़्याल रखें गुनाहों से बचें नेकियां करें और दुआयें करें।

❖❖❖

सहा-बए-किराम से अक़ीदत

—सम्पादक

रब की महब्बत रब की इबादत मोमिन की पहचान है
हुब्बे नबी और नबी की ताअ़त मोमिन की पहचान है
जिस मोमिन ने नबी को देखा और मरा ईमान पर
उसे सहाबी कहते हैं रश्क ऐसे इन्सान पर
छोटे से छोटा भी सहाबी दर्जा अहम वह रखता है
चाहे सहाबी अनपढ़ हो पर दर्जा अहम वह रखता है
बूबक्र उमर उस्मान अली अस्हाबे नबी में अअ़ला हैं
चारों हैं खुलफाए नबी उम्मत में सबसे अअ़ला
दौर हसन का थोड़ा है पर हसन ख़लीफ़ा राशिद हैं
तीस के अन्दर दौर है उनका वह भी ख़लीफ़ा राशिद हैं
हुब्बे सहाबा लाज़िम है हर मोमिन अहले सुन्नत पर
जिसमें नहीं है हुब्बे सहाबा नहीं है सीधे रस्ते पर
जो रखता है हुब्बे सहाबा हुब्बे नबी वह रखता है
जिस दिल में है बुग़ज़े सहाबा बुग़ज़ नबी से रखता है
दिल में न हो गिल्ले सहाबा रब ने दुआ सिखाई है
अस्हाबे नबी से रब राज़ी कुर्आ में ख़बर सुनाई है
रब की महब्बत हुब्बे नबी और हुब्बे सहाबा दिल में हो
नबी की ताअ़त, रब की ताअ़त सच्चा अक़ीदा दिल में हो
सलाम व रहमत नबी पे या रब और हो उनकी आल पर
उनकी सब अज़वाज पर और उनके अस्हाब पर
सल्लल्लाहु अला मुहम्मदिंव-व-अ़ला आलिही व
अस्हाबिही व बारक व सल्लम सलामन कसीरा

❖❖❖

मानव इतिहास की एक बड़ी क़ुर्बानी

—ताजुद्दीन अशअर रामनगरी

बूढ़ा परदेसी पैग़म्बर रुख़ पे तक़द्दुस बिखरा, बिखरा
गर्द आलूद परेशाँ चेहरा फिर भी नूर से निखरा, निखरा
शाम के देस से पैदल चल कर आज हिजाज़ में आया है यह
नेक उमंगें, पाक इरादे, साथ में अपने लाया है यह
हद्दे नज़र तक हू, का आलम, गाँव न बस्ती, पेड़ न इन्साँ
लम्बा रस्ता, धूप की तेज़ी, रेत के जलते भुन्ते मैदाँ
एक खजूर की थैली और इक मशकीज़ा हाथ में है
बीवी, सब्र व शुक्र की मूरत पीछे पीछे साथ में है
जीवन साथी की गोदी में नन्हा सा इक बच्चा है
बच्चा है या नूर का पैकर, इक मासूम फ़रिशता है
मुख़ड़े पर यूँ खेल रहा है एक तबस्सुम हलका, हलका
पिछले पहर चशमे के अन्दर, जैसे खिला हो फूल कंवल का
नन्हे मुन्ने से मुखड़े पर एक निराला भोला पन है
माँ की पुरशफ़क़त गोदी में कितना खुश है कैसा मगन है
भोला भाला फूल सा बच्चा, बाप के दिल का सहारा है
माँ उस पर वारी जाती है, उसकी आँख का तारा है
जाने कितनी दुआओं ने रहमत का दर खड़काया है
माँ की सूनी गोद ने यह अन्मोल रतन तब पाया है
दोनों अपने लाल की हर मासूम अदा पर मरते हैं
दोनों अपनी जान से बढ़ कर उससे महब्बत करते हैं
बूढ़ा परदेसी पैग़म्बर! क्या उसको पहचाना तुम ने?
कौन है? घर से क्यों निकला है? क्या कुछ यह भी जाना तुमने?
इब्राहीम उसे कहते हैं और नगर में रहता था यह
बचपन ही से अच्छी बातें, सच्ची बातें कहता था यह
एक खुदा का सच्चा बन्दा, एक खुदा से डरने वाला

उसकी राह में जीने वाला, उसकी राह में मरने वाला
एक ही चिन्ता हरदम उसके मन को घेरे रहती है
एक लगन बस इसको हर दिन सांय सवेरे रहती है
भूले भटके इन्सानों को कैसे राह पे लाऊँ मैं,
एक की रब के दर पर कैसे सब के शीश झुकाऊँ मैं,
कुफ़्र, शिर्क मिटाने की दुनिया से क्या तदबीर करूँ मैं?
इस दुनिया में कैसे एक नई दुनिया तामीर करूँ मैं,
प्रेम डगर में उस राही पर कैसे कैसे संकट आये
लेकिन इक पल की ख़ातिर भी उसके पाँव नहीं थर्राये
अपना सब कुछ मालिक की मर्ज़ी पर भेंट चढ़ाया उसने
आगे मौत खड़ी थी तब भी पीछे पग न हटाया उसने
उस पर जो भी बिप्ता बीती, उसको हँस कर झेल गया यह
आग के शोलों के अन्दर भी जान की बाज़ी खेल गया यह
बाप ने अपने घर से निकाला, क़ौम ने अत्याचार किया
राजा ने अगनी में डाला, जीना तक दुशवार किया
देश से निकला, मिस्र में पहुँचा, सत्य उपदेश सुनाने को
रब ने जो पैग़ाम दिया था, बन्दों तक पहुँचाने को
राजा-प्रजा का रखवाला, ख़ुद ही वहाँ बट मार हुआ
प्रदेसी की लाज को लूटे, इसके लिए तैयार हुआ
बे बस हो कर मिस्र को छोड़ा, आख़िर इक दिन शाम आया
लेकिन अब भी उस बन्दे को चैन न कुछ आराम आया
उसने कहीं खेती बाड़ी की और न कोई व्यापार किया
शाम में जितने रोज़ रहा, सच्चाई का प्रचार किया
शाम के देस से पैदल चल कर आज हिजाज़ में आया है
नेक उमंगें पाक इरादे साथ में अपने लाया है यह

(हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी और बच्चे को मक्के की सुनसान और खाने व पानी से रहित ज़मीन पर छोड़ कर मुल्क शाम वापस जा रहे हैं, तब हज़रत हाजिरा अलैहिस्सलाम अपने शौहर हज़रत इब्राहीम अलै0 से पूछती हैं)

ऐ! मेरे सरताज, किधर हमसे मुँह मोड़े जाते हो?
इस जंगल में हम दोनों को किस पर छोड़े जाते हो?
यह थोड़ा सा खाना पानी कब तक साथ निभायेगा?
मेरी छाती सूखा गई तो यह बच्चा मर जायेगा,
मैं बेचारी अब्ला नारी, आख़िर क्या कर सकती हूँ?
इस मासूम के जीवन की कैसे रक्षा कर सकती हूँ?
हाँ हमको यूं छोड़ के जाना, गर ईमाये यज़दाँ है,
तब जाओ, कुछ फ़िक्र नहीं, अपना अल्लाह निगेहबां है,

(कई वर्षों बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मक्का वापस आये और बीवी बच्चों के साथ रहने लगे, एक रोज़ हज़रत इब्राहीम अलै0 अपने बेटे हज़रत इस्माईल से फ़रमाते हैं)

इस्माईल! ऐ लाडले बेटे, राहते मादर, जाने पिदर!
मेरे सोलः साल के गबरू, दिल के टुकड़े लख़्ते जिगर
तुझको कैसे बताऊँ मैं, तू मुझ को कितना प्यारा है
ज्योति है मेरी आँखों की, बूढ़ी बाहों का सहारा है
मेरे लाल! इजाज़त दे तुझको इक बात बताऊँ मैं
सपना जो मैंने देखा है पिछली रात, बताऊँ मैं
देखा है कि पूरा मैं अल्लाह का फ़रमाँ करता हूँ
हुक्मे ख़ुदा से, राहे ख़ुदा में तुझ को क़ुरबाँ करता हूँ
यह तो मेरा ख़्वाब हुआ, अब तू यह बता क्या कहता है?
फ़र्ज़ को पूरा करता है या अक़्ल की रौ में बहता है

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम बहुत ही रज़ामन्दी के साथ जवाब देते हैंः–

अब्बा जान! ज़हे क़िस्मत जो आज यह साअत आई है
अपने ग़ुलाम पे आक़ा ने रहमत की नज़र फ़रमाई है
मालिक की मरज़ी के आगे जान की कुछ औक़ात नहीं
जिसने दी वह मांग रहा है, कोई बड़ी यह बात नहीं
मेरा तन , मेरा जीवन, सब कुछ मालिक को अर्पण है
आप छुरी लें हाथों में, यह हाज़िर मेरी गरदन है

(बाप बेटे हुक्मे ख़ुदावन्दी की तामील के लिए कमर बसता हो कर सुनसान बियाबान में पहुंचते हैं, इस्माईल अलैहिस्सलाम ख़ुद ज़मीन पर लेट जाते हैं, और इब्राहीम अलैहिस्सलाम छुरी की तेज़ धार बेटे के नर्म व नाजुक गले पर रख देते हैं और तब–)

फटने लगी कौनैन की छाती देख के यह दिल दोज़ नज़ारा
जंगल चुप चुप, धरती गुम सुम, अंबर का दिल पारा पारा
नब्ज़े दौराँ साकित व सामित, वक़्त का धारा मदधिम, मदधिम
चश्मे गेती गिरयाँ गिरयाँ, ज़ुल्फ़े हस्ती बरहम, बरहम
जंगल के सब पंख पखेरू चीख़ रहे थे हाँप रहे थे
गरदूँ पर अनगिन्त फ़रिश्ते थर, थर, थर, थर काँप रहे थे
दश्ते नीली फ़ाम का राही चलते चलते ठहर गया था
फ़रशे ज़मीं से अर्श बरीं तक इकशोर फ़रयाद बपा था
ख़्वाब हक़ीक़त के सांचे में सच मुच ढलने ही वाला था
बाप का ख़नजर बेटे के हुलकूम पे चलने ही वाला था
इतने में ये सौते ग़ैबी आई हरीमें कुदस के दर से
मेरे ख़लील! उठा ले जल्दी अपना ख़नजर हलके पिसर से
हम को तेरे नूरे नज़र की कुरबानी मतलूब नहीं है
जिसे तुझ को प्यार है क्या वह मेरा भी महबूब नहीं है
जांच फ़क़त करनी थी हमको तेरे ख़ुलूसे इश्क़ व वफ़ा की
तू इस जांच में पूरा उतरा, ख़्वाब को ख़ुद ताबीर अता की
दुनिया की आइन्दा नसलें यह कुरबानी याद करेंगी
तसलीम व ईसार की यह बेमिस्ल कहानी याद करेगी
फ़र्श ज़मीं पर दौर मे जब तक चरख़े नीलीफ़ाम रहेगा
इनसानों की इस दुनिया में ज़िन्दा तेरा नाम रहेगा
तुझ को इमामत हासिल होगी, क़ौमो का सरदार बनेगा
तेरा उसवः इस्लाम व ईमान का इक मेयार बनेगा

◆◇◆

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफा़दियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़ितमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के अशआ़र पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

اتر پردیش کا مشہور میوہ قلمی آم ہے، ملیح آباد کی دسہری بڑی لذیذ ہوتی ہے، یہ باہر ملکوں میں بھی بھیجی جاتی ہے، چوسا جس کو ثمر بہشت بھی کہتے ہیں، بہت ہی لذیذ ہوتا ہے، سفیدا کی لذت الگ ہی ہوتی ہے، آم کی سیکڑوں قسمیں ہیں، ہر قسم اپنا الگ مزہ رکھتی ہے، قلمی آم قابض ہوتا ہے، قلمی آم کھا کر اگر دودھ پی لے تو آم جلد ہضم ہو جاتا ہے، اگر روزانہ آم کھا کر دودھ پیئں تو صحت اچھی ہو جاتی ہے۔

उत्तर प्रदेश का मशहूर मेवा क़लमी आम है, मलिहाबाद की दसहरी बड़ी लज़ीज़ होती है, यह बाहर मुल्कों में भी भेजी जाती है, चौसा जिसको समर बिहिश्त भी कहते हैं बहुत ही लज़ीज़ होता है, सफ़ेदा की लज़्ज़त अलग ही होती है, आम की सैकड़ों क़िस्में हैं, हर क़िस्म अपना अलग मज़ा रखती है, क़लमी आम क़ाबिज़ होता है, क़लमी आम खा कर अगर गर्म दूध पी ले तो आम जल्द हज़्म हो जाता है, अगर रोज़ाना आम खा कर दूध पिये तो सेहत अच्छी हो जाती है।